Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 43 • 29 जुलाई - 04 अगस्त, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 27-07-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

अर्हत् उवाच

जेहिं काले परक्कंतं,
ण पच्छा परितप्पए।
जो ठीक समय पर
पराक्रम करते हैं वे बाद
में परिताप नहीं करते।

यह चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप को आगे बढ़ाने वाला हो : आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त निर्देशन में होने वाली सम्यक् दर्शन कार्यशाला के बैनर का पूज्यवर की सन्निधि में हुआ अनावरण

सूरत।
20 जुलाई, 2024

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी। जिनशासन में यह दिन चतुर्मास की स्थापना का दिन है। आज के दिन प्रायः सभी साधु-साध्वियां एक स्थान पर चार माह के लिए स्थिर हो जाते हैं। चतुर्मास का समय त्याग-तपस्या के साथ धार्मिक-आध्यात्मिक साधना का समय होता है। सूरत में भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के संयम विहार परिसर में आचार्य श्री महाश्रमण जी अपने विशाल साधु-साध्वी समुदाय के साथ सन् 2024 चातुर्मास करने पधारें हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महावीर समवसरण में मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आज आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी है, चतुर्मास लगने वाली चतुर्दशी है। कल का दिन आचार्य भिक्षु का जन्मदिवस था। आचार्य भिक्षु जन्मदिवस त्रयोदशी है, तो महाप्रयाण दिवस भी त्रयोदशी है। आचार्य भिक्षु का जन्म कंटालिया में 298 वर्ष पूर्व हुआ था। विशिष्ट आत्मा से जुड़ा होने से गांव का नाम भी विशिष्ट हो जाता है। आने वाले वर्ष में आचार्य भिक्षु के जन्मदिवस को त्रि-शताब्दी लगने वाली है। आचार्य भिक्षु में ज्ञान का वैशिष्ट्य था, वीर वाणी में उनकी प्रगाढ़ श्रद्धा थी। आगमों का मंथन कर उन्होंने नवनीत निकाला था। ज्ञान के साथ उनकी श्रद्धा भी विशेष थी, आचार भी उनका अपने ढ़ंग का था। तपस्या भी करते थे। दो मुनि थिरपालजी, मुनि फतेहचंदजी की बात को मानकर लोगों को समझाने में उन्होंने पुरुषार्थ किया। जन्म लेना बड़ी बात नहीं है परन्तु जन्म और मरण के बीच का काल महत्वपूर्ण होता है। जिसका जीवन महत्वपूर्ण होता है, उसका जन्म भी महत्वपूर्ण हो जाता है। उसकी मृत्यु का दिवस भी मनाने लायक हो जाता है। सिरियारी का वह स्थान जहां चरम दिवस पर धम्म जागरणा होती है, अन्य स्थलों पर भी धर्म जागरणा होती है। कल बोधि दिवस पर आठ दीक्षाऐं हो गई।

चतुर्मास से पहले आध्यात्मिक मंगल, अष्ट मंगल हो गया। आज चतुर्मासिक चतुर्दशी है, चतुर्मास धार्मिक-आध्यात्मिक साधना का काल है। शेष काल में तो यात्राएं होती हैं। चतुर्मास में स्थिरता हो जाती है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप यह मोक्ष का मार्ग बताया गया है। स्थिरता में ज्ञानाराधना के लिए ज्यादा से ज्यादा समय नियोजित हो। (शेष पेज 13 पर)

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने स्वीकारी गुरु मुख से प्रदत्त मंत्र दीक्षा

तेरापंथ के अध्ययन हेतु जानें इतिहास, दर्शन और मर्यादा-व्यवस्था : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
21 जुलाई, 2024

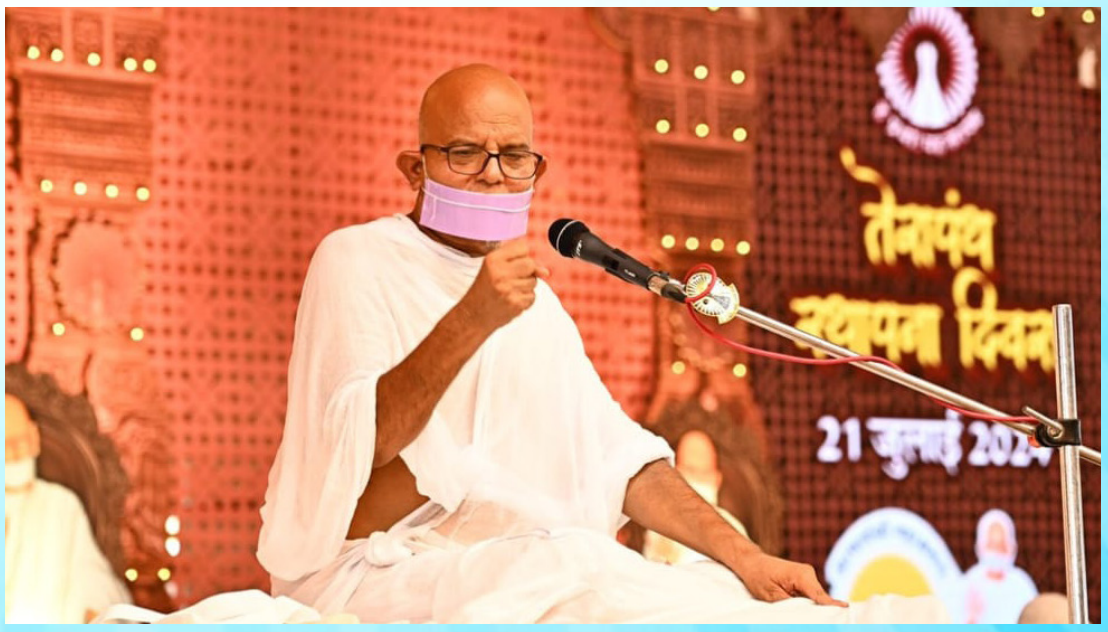

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा-गुरु पूर्णिमा और तेरापंथ स्थापना दिवस। आज ही के दिन 264 वर्ष पूर्व केलवा में वि. सं. 1817 सायं लगभग 07 बजकर 25 मिनट पर आचार्यश्री भिक्षु ने नव भाव दीक्षा ग्रहण कर तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की थी। अन्य सम्प्रदायों में गुरु पूर्णिमा का भी विशेष महत्व है। आज चतुर्मास प्रारम्भ का दिन भी है।

आचार्यश्री भिक्षु की गादी पर सुशोभित, तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन मंगल प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ का 265वां स्थापना दिवस व चातुर्मास का प्रथम दिन, आषाढ़ी पूर्णिमा ऐतिहासिक दृष्टि से इतना महत्वपूर्ण है, जितना भारत देश के लिए 15 अगस्त का दिन होता है। आज का दिन स्वतंत्र पंथ के प्रारम्भ का दिन है। 26 जनवरी गणतंत्र दिवस है तो हमारे लिए माघ शुक्ला सप्तमी प्रतिष्ठा प्राप्त दिवस है। हमारे धर्मसंघ को 264 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं।

तेरापंथ - मेरापंथ बन जाए। तेरापंथ के नामकरण में जहां तेरह की संख्या का योगदान है, वहीं तेरह नियमों का भी महत्व है। जोधपुर के दीवान ने जब देखा कि कुछ श्रावक धर्म स्थान में सामायिक नहीं कर दुकान में धर्माराधना कर रहे हैं। दीवान जी और श्रावकों की बातचीत को सुनकर सेवग जाति के कवि ने एक दोहा रच दिया -

साध-साधरोगिलोकरे, तेआपआपरोमंत।
सुणजोरेशहररालोगां, ऐतोतेरापंथीतंत।।

नामकरण का मूल उद्गम तो सेवग जाति का वचन है। इस रूप में हम सेवग जाति का आभार मानें की हम नाम उनसे मिला। भिक्षु स्वामी के पास यह बात पहुंची। उन्होंने उदारता से 'तेरापंथ' नाम को स्वीकार कर लिया। सूत्र आपका, अर्थ हमारा। 13 साधु, 13 श्रावक इसलिए तेरापंथ, पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्तियां -इन तेरह नियमों के आधार पर तेरापंथ, और आचार्य भिक्षु ने कहा- हे प्रभो! यह तेरांपथ।

भगवान पंथ तो आपका है, हम उस पर चलने वाले पथिक हैं। इस बात में एक भक्ति उभरती है। इस नाम में भी मानो भगवान महावीर को श्रेय दिया गया है कि तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है। (शेष पेज 12 पर)

मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यक है सर्व ज्ञान प्रकाशन : आचार्यश्री महाश्रमण

नागरिक अभिनन्दन कार्यक्रम में पूज्य प्रवर ने दी आनंद और शांति का ताला खोलने की प्रेरणा

सूरत।
16 जुलाई, 2024

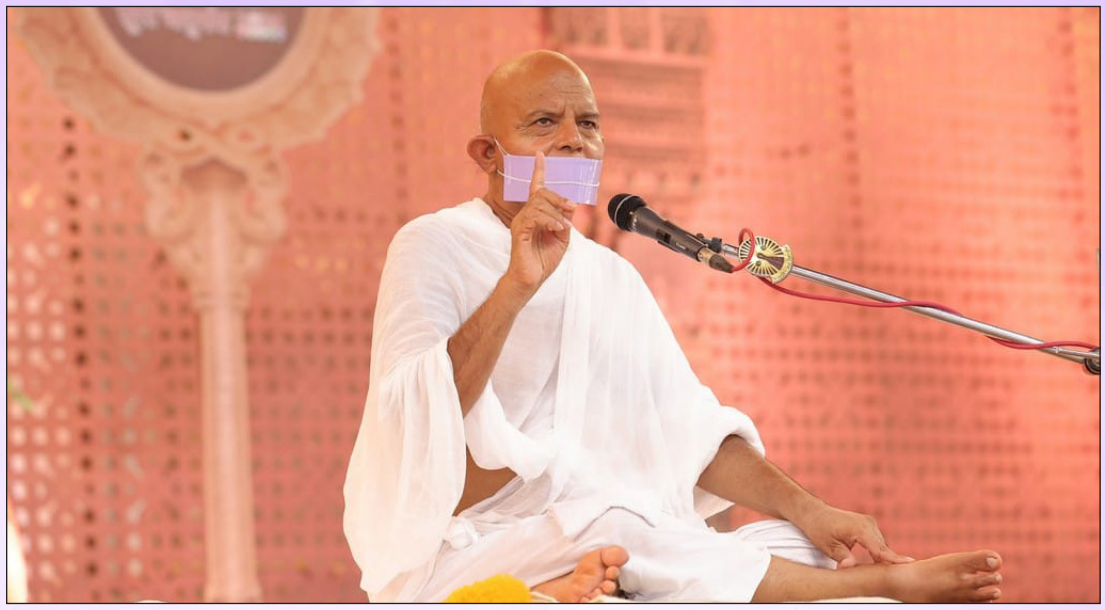

जिनशासन प्रभावक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के महावीर समवसरण में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में दो प्रकार के जीव होते हैं- सिद्ध और संसारी। सिद्ध स्वरूप जीव जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त होते हैं, वे परमात्म पद को प्राप्त हो जाते हैं। वे अशरीरी, अ-मन, अवाक्, निरंजन, निराकार, निर्दुःख होते हैं।

दुःख क्यों और कैसे होता है? शरीर में दुःख होता है, शरीर में कोई बीमारी लग सकती है या कहीं कोई दर्द हो सकता है। सिद्ध तो शरीर मुक्त हैं तो शरीर सम्बन्धी कोई दुःख उन्हें हो ही नहीं सकता। किसी व्यक्ति का सम्मान न हो, मानसिक तनाव हो, अपमान हो जाए, अवसाद की स्थिति बन जाए, इनसे वह दुःखी बन जाता है। सिद्ध आत्माओं के मन होता ही नहीं है, तो उन्हें मानसिक कष्ट भी नहीं है। तीसरा कष्ट भावात्मक दुःख - गुस्सा, अहंकार, माया, लोभ, राग-द्वेष आदि के रूप में हो सकता है। सिद्धों में न गुस्सा है, न राग है, न द्वेष है, न अहंकार है, उनसे बड़ा तो कोई वीतराग होता ही नहीं है। सिद्धों के न शारीरिक दुःख हैं, न मानसिक दुःख हैं और न भावात्मक दुःख हैं। वे पूर्णतया दुःख मुक्त होते हैं, सहजानन्द होते हैं।

सुख भी दो प्रकार का हो जाता है। एक बाहर के निमित्तों से होने वाला सुख और दूसरा भीतर से उत्पन्न होने वाला सुख। बाहर का सुख परिस्थिति सापेक्ष है। जैसे पानी दो प्रकार का होता है- कुंड का पानी और कुएं का पानी। कुंड में बाहर से पानी डाला जाता है, वह कभी समाप्त भी हो सकता है। कुएं में पानी भीतर के स्रोत से आता है। प्रशंसा, मनोज्ञ खाद्य पदार्थ, अच्छा दृश्य या रूप इनसे मिलने वाला सारा सुख बाहर से मिलने वाला सुख है, जो शाश्वत नहीं है। एक भीतर का सुख है, वह परिस्थिति सापेक्ष नहीं होता, वह तो वीतरागता से आने वाला सहज सुख है। उस सुख को दूसरा कोई छीन नहीं सकता। सिद्ध भगवान का सुख शाश्वत सुख है, एकांत सौख्य है। उनके सुख को कोई चुरा नहीं सकता है।

सिद्धों वाला सुख कैसे प्राप्त हो? शास्त्र में कहा गया कि सर्व ज्ञान प्रकाशन हो जाए, अज्ञान-मोह का विवर्जन हो जाए, राग-द्वेष का संक्षय हो जाए तो आत्मा एकान्त सौख्य वाले मोक्ष को प्राप्त हो जाती है। मोक्ष में जाने के लिए सर्व ज्ञान प्रकाशन (केवल ज्ञान) की प्राप्ति जरूरी है और केवल ज्ञान के लिए शर्त है कि राग-द्वेष का क्षय करना पड़ेगा। बिना वीतरागता को प्राप्त किए सर्व ज्ञान प्रकाशन नहीं हो सकता और वीतरागता के लिए अज्ञान मोह, मिथ्यात्व को नष्ट करना होगा। इस प्रकार तीन चरण हो जाते हैं - अज्ञान मोह - मिथ्यात्व का विवर्जन, राग-द्वेष का पूर्णतया क्षय, उसके बाद सर्व ज्ञान का प्रकाशन। ये तीन स्थितियां प्राप्त हो जाती हैं तो फिर आत्मा को मोक्ष की स्थिति प्राप्त हो जाती है।

जीवों का दूसरा प्रकार है- संसारी जीव। संसारी जीव सशरीर होते हैं। जब तक मोक्ष न हो जाए वे जन्म-मरण के चक्र में भ्रमण करते रहते हैं। कई जीव ऐसे भी होते हैं, जो कभी भी मोक्ष में नहीं जाएंगे, वे अभव्य जीव होते हैं। भव्य जीव मोक्ष प्राप्ति तक जन्म मरण के चक्र में हैं। हम सभी संसारी जीव हैं। संसारी जीवों को सम्यक् बोध मिल जाए, मोक्ष का मार्ग मिल जाए, दुःख मुक्ति का मार्ग मिल जाए। उस मार्ग पर बढ़ते-बढ़ते एक समय आता है जब वे संसार से मुक्त होकर सिद्धत्व को प्राप्त हो जाते हैं।

गाँव-शहर में गुरुओं, साधुओं का आगमन होता है। चतुर्मास में एक जगह ही प्रवास करना होता है। चातुर्मास में लोगों को धर्म लाभ प्राप्त करने की सुविधा हो जाती है। गुरु उपासना में रहकर लम्बे समय तक धार्मिक साधना करने का, प्रवचन सुनने का अवसर मिल जाता है। प्रवचन सुनने से कई लाभ हो सकते हैं। श्रोता प्रवचन से प्राप्त बोध को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। पर जो लोग उस बोध को अपने जीवन में नहीं भी उतार पाते हैं वे कम से कम जितनी देर तक बैठ कर सुनते हैं, उपासना करते हैं, उतने समय तक वे सांसारिक कार्यों से, पापों से मुक्त हो जाते हैं। इस प्रकार प्रतिदिन के दो घंटे भी पाप मुक्त व्यतीत हो सकते हैं। कोई उस समय में सामायिक कर लेते हैं तो उसका भी लाभ हो सकता है।

सुनने से कई नई जानकारियां मिल सकती हैं और कई पुरानी जानकारियां पुष्ट हो सकती है। सुनते-सुनते मन की जिज्ञासाओं अथवा प्रश्नों का समाधान हो सकता है। ध्यान से सुनने वाला श्रोता अच्छा वक्ता भी बन सकता है। साधु तो अहिंसा के पुजारी होते हैं। उनकी वाणी सुनने से, दर्शन करने से भी पाप झड़ सकते हैं। संतों का समागम होना और धर्म की कथा होना अपने आप में विशेष उपलब्धि माना जा सकता है। हम तीन बातों का प्रचार कर रहे हैं - सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। इन तीन बातों से समाज में अपराध की कमी आ सकती है। हम तो साधु लोग हैं, नागरिक अभिनन्दन ठीक है, साधु तो अपनी साधना करे। सूरत के सम्पूर्ण नागरिक समूह में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के भाव पुष्ट रहें। सभी चतुर्मास में अच्छा आध्यात्मिक लाभ लेने का प्रयास करें। यह परिसर संयम विहार है, यहाँ संयम की प्रेरणा के स्वर मुखर होते रहें और संयम की चेतना का विकास होता रहे।

पूज्य गुरुदेव की अमृत देशना से पूर्व साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने मंगल उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में चिंतामणि रत्न, कल्पवृक्ष और कामधेनू को दुर्लभ माना गया है, इनका अपना महत्व भी है। किन्तु सबसे अधिक दुर्लभ है - सज्जन सत्संग। जिसे सज्जन का सत्संग मिलता है, वह व्यक्ति धन्य हो जाता है। जब व्यक्ति को महान पुरुषों का सान्निध्य मिलता है, तो उसकी दशा और दिशा दोनों बदल सकती है। सूरत वासियों को महापुरुष का सान्निध्य व उनकी वाणी सुनने का अवसर मिल रहा है।

आचार्यवर के प्रवचन से एक नई दृष्टि, नया विचार और नया चिंतन प्राप्त होता है जिससे ज्ञानवर्धन तो होता ही है साथ ही साधना में विकास करने के सूत्र भी प्राप्त होते हैं। परम पूज्य आचार्यवर सूरत में चार महीनों तक अमृत की वर्षा करने वाले हैं, आप अपने हृदय के पात्र को खुला रख कर आचार्यप्रवर की वाणी को सुनें और अपने हृदय में अमृत का संचय करें।

पूज्यवर के नागरिक अभिनन्दन के कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के सदस्यों ने मंगल गीत का सुमधुर संगान किया। जनोद्धारक आचार्य प्रवर की यात्रा की झलकियों को डॉक्यूमेंट्री फिल्म द्वारा प्रदर्शित किया गया। अभिनन्दन समिति की ओर से भरत शाह ने अपने विचार व्यक्त किये। मेयर दक्षेश मावाणी, सांसद मुकेश दलाल, पद्मश्री मथुरभाई सवानी आदि ने सूरत शहर की प्रतीकात्मक चाबी पूज्य प्रवर को उपहृत की।

अभिनन्दन कार्यक्रम के सन्दर्भ में पूज्यप्रवर ने फ़रमाया कि इस कार्यक्रम में थोड़ी नवीनता लगी, अभिनन्दन कार्यक्रम में चाबी देने की बात कई बार देखी है, अभिनन्दन पत्र भी कई बार देखा है पर अभिनन्दन पत्र और चाबी दोनों एक साथ यहाँ सूरत में देखा है। अभिनन्दन पत्र भी चाबी के रूप में है। यह चाबी सद्भावना, नैतिकता और नशा मुक्ति की चाबी बन समस्याओं और अपराध के तालों को दूर कर आनंद और शांति का ताला खोलने के काम आए। सूरत में खूब आध्यात्मिक-धार्मिक जागरणा होती रहे। समस्याओं का शांति से समाधान का प्रयास रहे।

बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदितकुमारजी ने अभिनंदन समारोह में अपने वक्तव्य में कहा - अभिनन्दन उसी का होता है जिसमें संतता है, महानता है, गतिशीलता है और जो हर पल - हर क्षण सबको प्रेरणा प्रदान करता है। इस भेंट की गई चाबी के माध्यम से आचार्य प्रवर की प्रेरणा से सूरत शहर की विकृतियां दूर हो तथा यहाँ धर्म के संस्कार विकसित होते रहें। आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व महान है, विशाल है। आचार्य प्रवर का सूरत पदार्पण यहाँ की जनता के लिए विशेष प्रेरणा का काम करेगा।

मेयर दक्षेश मावाणी, सांसद मुकेश दलाल, डॉ जीतूभाई शाह, जय छेड़ा, सूरत शहर बीजेपी महामंत्री किशोर बिंदल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सुरेश मास्टर ने पूज्य प्रवर के प्रति अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। भगवान महावीर यूनिवर्सिटी की ओर से संजय जैन, अनिल जैन ने पूज्य प्रवर का अभिनन्दन किया। नागरिक अभिनन्दन पत्र का वाचन अंकेश भाई शाह ने एवं आभार ज्ञापन संजय सुराणा ने किया।

नागरिक अभिनन्दन कार्यक्रम का संचालन नानालाल राठौड़ एवं विश्वेश संघवी ने किया।

गुरु की शक्ति से चातुर्मास सफल हो

पीतमपुरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्रीजी ठाणा-5 का डिजिटल डिटॉक्स रैली के साथ खिलौनी देवी धर्मशाला, पीतमपुरा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। स

ंवागत सभा में साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा- आज हमें अत्यधिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है, इसलिए नहीं कि हम अपने चातुर्मासिक स्थल में आ गए अपितु इसलिए कि आज गुरूदेव के निर्देश का अक्षरशः पालन हो गया है। गुरू हमारे लिए प्राण, त्राण और शरण हैं।

हमारा समर्पण, श्रद्धा, आस्था, हमेशा प्रवर्धमान रहे। गुरूवर की शक्ति से हमारा चातुर्मास साधना, आराधना एवं श्रावक समाज की सार-संभाल की दृष्टि से सफल एवं सुफल हो। यह पावस हम सबके लिए गुरूकृपा से आत्म उत्थान एवं नवोत्थान में योगभूत बने। पावस का यह समय आत्मज्योति को तप, जप, ज्ञान, ध्यान से प्रज्जवलित कर पूरे जीवन को आनंद की रोशनी से रोशन करने का समय है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने चातुर्मास में अध्यात्म-संपदा से संपन्न बनकर आत्म मंजिल की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने 'महिषासुर मदिनी दुर्गा आई है' कार्यक्रम की रोचक प्रस्तुति के माध्यम से सभी को डिजिटल डिटॉक्स के बारे में बताते हुए साध्वीश्री द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताया एवं चातुर्मास में होने वाले कार्यक्रमों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया।

पीतमपुरा सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया ने कहा- साध्वीश्री जी ने चोखले में अति श्रम कर जागृति के दीप जलाए हैं। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, महिला मंडल अध्यक्ष मधु सेठिया, तेयुप अध्यक्ष राकेश भंसाली, अभातेयुप के पूर्व सहमंत्री सुरेन्द्र सेठिया, अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपने भावों की श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

दिल्ली सभा की ओर से पुरुष वर्ग और महिला वर्ग ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। उत्तर महिला मण्डल, त्रिनगर सभा ने भी गीत के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति दी।

खिलौनी देवी परिवार से भाई-बहनों ने अति सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। मोमासर मित्र मंडल ने मोमासर की लाडली बहनों को मंगल प्रवेश पर बधाई संप्रेषित की।

राकेश जैन ने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन राजेश जैन ने किया।

संघ, संघपति, त्याग और महाव्रत का है स्वागत

इंदौर।

युगप्रधान, महामनस्वी, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी रचनाश्रीजी 'टमकोर' आदि ठाणा 4 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश तेरापंथ भवन न्यू पलासिया में हुआ। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित स्वागत समारोह का शुभारंभ साध्वीश्री के नवकार मंत्र के संगान के साथ हुआ। स्वागत कार्यक्रम में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ सभा इंदौर के अध्यक्ष निर्मल नाहटा ने साध्वीश्री के स्वागत में भाव व्यक्त किए।

साध्वी रचनाश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज स्वागत हमारा नहीं, संघ, संघपति, त्याग और महाव्रत का हो रहा है। चातुर्मास काल में लाभ लेने की प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा कि श्रावकों के सामने चार महीने का लंबा समय है।

आप अपने क्षयोपशम को प्रबल करें और ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप में अपने श्रम का नियोजन करें। साध्वी श्री ने चातुर्मास का प्रारंभ तपस्या, तेले के साथ प्रारंभ करने की प्रेरणा दी। साथ ही गुरुदेव का चातुर्मास इंदौर में हो इस हेतु श्रावक समाज को जागृत करते हुए उपासकों की संख्या वृद्धि, ज्ञानशाला में ज्ञानार्थियों का प्रवेश और मुख्य रूप से वैरागी भाई-बहन तैयार करने की प्रेरणा दी।

स्वागत समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उज्जैन (उत्तर) के विधायक अनिल जैन कालूखेड़ा का स्वागत सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा एवं उपाध्यक्ष रमेश कोठारी के द्वारा साहित्य से किया गया।

विधायक अनिल जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि व्यक्ति अगर अपने विचार, भाव और बुद्धि को निर्मल रखता है तो उसका आध्यात्मिक विकास हो जाता है। साधु-साध्वियों का आगमन हमारा सौभाग्य है। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की गई। महासभा के आंचलिक प्रभारी निलेश रांका ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष ममता सामोता, तेयुप अध्यक्ष अर्पित जैन ने अपने स्वागत उद्गगार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन सुनिल सामोता एवं आभार तेरापंथी सभा के सहमंत्री मनीष दुग्गड ने व्यक्त किया।

चातुर्मास काल होता है तप-जप, स्वाध्याय, प्रवचन श्रवण का सीजन

भीलवाड़ा।

साध्वी कीर्तिलताजी ठाणा-4 का तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन, भीलवाड़ा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश के अवसर पर आयोजित स्वागत समारोह में साध्वी कीर्तिलताजी ने कहा कि गुरु इंगित की आराधना से आज हमने वस्त्र नगरी भीलवाड़ा में मंगल प्रवेश किया है।

धर्म की श्रृंखला न टूटे, जुड़ी रहे इसलिए साधु-साध्वियां चातुर्मास करते हैं।अध्यात्म जगत के संत जन घूम-घूम कर स्व और पर कल्याण की भावना लिए सत्य, अहिंसा के लक्ष्य को आत्मसात करते हुए निरंतर गतिमान रहते हैं।

यह चातुर्मास काल धर्म-ध्यान, तप-जप, त्याग, स्वाध्याय, प्रवचन श्रवण का सीजन होता है। अध्यात्म की गतिविधियों द्वारा हम अपनी शक्ति को संतुलित करते हुये अपना जीवन निर्माण करें तो यह चातुर्मास उत्कृष्ट दिशा में आगे बढ़ सकता है। धर्मसंघ के रथ में बैठकर हम सब अभय की साधना में रत रहें। चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के शुभ अवसर पर भीलवाड़ा सांसद दामोदर अग्रवाल ने साध्वीवृन्द के चातुर्मास के प्रति शुभ आध्यात्मिक मंगल कामना व्यक्त की।

सभा अध्यक्ष जसराज चोरडिया ने भीलवाड़ा तेरापंथ समाज की ओर से साध्वीवृन्द का स्वागत करते हुए अपनी भावना प्रकट की। समर्पित एवं उत्साहित भावों से महिला मण्डल एवं अणुव्रत समिति की बहनों ने स्वागत गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री योगेश चण्डालिया ने किया।

चातुर्मास में आस्था का आधार सशक्त बने

कालबादेवी (मुंबई)।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि कुलदीपकुमारजी एवं मुनि मुकुलकुमारजी ने दक्षिण मुंबई स्थित आचार्य महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, कालबादेवी में भव्य रैली के साथ मंगल प्रवेश किया। मुनि कुलदीपकुमार जी ने कहा आज मैं आचार्यश्री के वचनों की पालना कर निश्चिंत हो गया हूँ। चतुर्मास में सभी त्याग ,तपस्या, सेवा और साधना में स्वयं को ऐसे नियोजित करें कि जैनत्व सार्थक हो जाए। मुनि मुकुलकुमारजी ने कहा- यह चातुर्मास केवल औपचारिक अथवा स्मृति मात्र बनकर न रह जाए, हमारी ज्ञान की धारा समुज्वल रहे, आस्था का आधार सशक्त बने और चारित्र श्रेष्ठता के शिखर पर पहुंचे। इस अवसर पर अहमदाबाद सभा के मंत्री विकास पितलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री श्रेयांश मुणोत ने एवं कार्यक्रम का संचालन दक्षिण मुंबई सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

महावीर के संदेशवाहक धर्म की लौ जलाने आए हैं

इकबालगंज।

साध्वी कनकरेखाजी ठाणा-4 का चातुर्मास हेतु प्रवेश इकबाल गंज चौक स्थित तेरापंथ भवन में हुआ। साध्वीश्री के शुभागमन पर तेरापंथी सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला के सदस्य अपने-अपने गणवेश में जयकारों के साथ अनुशासन रैली की शोभा बढ़ा रहे थे।

मुख्य कार्यक्रम में साध्वी कनकरेखाजी ने कहा- रथ यात्रा के पावन दिन मंगल प्रवेश हम सबके लिए नई खुशियां लेकर आया है, आध्यात्मिक ऊर्जा से भीतरी चेतना जगाने आया है। धर्म के मूर्तरूप संत चिंतामणि रत्न के समान हैं। संतों का आगमन पुण्यशीलता का प्रतीक है, सुप्त चेतना को जगाने

संतों का आगमन पुण्यशीलता का प्रतीक है

महावीर के संदेशवाहक बन हम धर्म की लौ जलाने आए हैं। हमें विभिन्न रूपों में ज्ञान, दर्शन व तप की आराधना करनी है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की गीतिका के साथ हुआ।

साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने कहा- संत बसंत लेकर आते हैं। साध्वी संवरविभाजी व साध्वी हेमंतप्रभाजी ने सुमधुर प्रस्तुति दी। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष धीरज जैन सेठिया ने कहा की परम पूज्य महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महती कृपा करके विदुषी साध्वीश्री का चातुर्मास हमें प्रदान किया है। महासभा सदस्य कुलदीप सुराणा, तेयुप अध्यक्ष उज्ज्वल जैन, तुलसी कल्याण केन्द्र के ट्रस्टी चंद्र मोहन ने अपने विचार रखे। राजेश सेठिया ने आभार ज्ञापन एवं कार्यक्रम का कुशल संचालन कमल नौलखा ने किया।

संक्षिप्त खबर

आत्म शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

डोंबिबली। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि आत्मार्थी के लिए प्रतिक्रमण अत्यन्त आवश्यक है। साधु-साध्वी के लिए तो विहार हो या बुखार हो, चाहे शरीर की अस्वस्थता भी हो, कार्य की कितनी भी व्यस्तता हो, आहार-प्रवचन-अध्ययन-अध्यापन गौण किया जा सकता है परन्तु सुबह-शाम प्रतिक्रमण आवश्यक है। अगर स्वयं न कर सके तो सहयोगी प्रतिक्रमण करवाने में तत्परता रखते हैं। आत्म शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण की नितान्त आवश्यकता समझनी चाहिये। मुख्य वक्ता उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने प्रतिक्रमण क्यों? कब? कैसे? की व्याख्या की। प्रतिक्रमण का उच्चारण, अर्थ और विधि को भी विस्तार सहित समझाया। प्रतिक्रमण कार्यशाला में कन्या मंडल, किशोर मंडल, युवक परिषद, महिला मंडल सभा के पदाधिकारियों के साथ अनेक लोगों ने कार्यशाला का लाभ उठाया।

चातुर्मास में प्रज्वलित करें अध्यात्म का दीप

विलेपार्ले। आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी का विलेपार्ले के विशनदयाल गोयल के फ्लैट में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। विशाल सद्भावना यात्रा और मंगल उद्घोष के साथ हुए मंगल प्रवेश के पश्चात स्वागत कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र से हुआ। विलेपार्ले एवं सांताक्रुज महिला मंडल, डोंबिवली युवक परिषद, रेणु कोठारी, ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत के माध्यम से स्वागत किया। गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए साध्वी शकुन्तला कुमारी जी ने कहा- यह चतुर्मास 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी का है। इस चातुर्मास में अध्यात्म का दीप जप, तप और स्वाध्याय से प्रज्वलित करना है। गुरुदेव की शक्ति से व उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी की प्रेरणा से व आप सबकी धार्मिक आराधना से चतुर्मास ऐतिहासिक बने। आपने गोयल परिवार की सेवा को प्रशंसनीय बताया। साध्वी संचितयशाजी, साध्वी जागृतप्रभाजी व साध्वी रक्षितयशाजी ने अपने विचारों को 'अजब-गजब मॉल' के दृश्य व गीत से व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अनिल बाफना एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री शंकी कोठारी ने किया।

संतों से मिलता है प्रेम, मैत्री, करुणा व अहिंसा का पथदर्शन

जसोल। अहिंसा रैली के साथ मुनि यशवंतकुमारजी व मुनि मोक्षकुमारजी का चार्तुमासिक नगर प्रवेश हुआ। मुनिश्री के नगर प्रवेश पर तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल व अणुव्रत समिति की ओर से स्वागत किया गया। कार्यक्रम में संबोधित करते हुए मुनि यशवंतकुमारजी ने कहा कि संत-ऋषियों की यह भारत भूमि, जहां अनेक तपस्वी संतों ने इस धरा का गौरव बढ़ाया। नगर में संतों के आगमन से मन रूपी बसंत खिलता हैं। संत धरती के कल्पवृक्ष हैं, चिंतामणि रत्न के समान है। मुनिश्री ने कहा कि विश्व कल्याण की सोच के साथ प्रेम, मैत्री, करुणा व अहिंसा का पथदर्शन संतों के सौभाग्य से ही मिलता है। मुनि मोक्षकुमार ने मंगल प्रवेश शब्द की व्याख्या करते हुए ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की विशेष आराधना के लिए आह्वान किया। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला द्वारा अलग-अलग सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री धनपत संखलेचा ने एवं संचालन महिला मंडल उपाध्यक्ष सरोज भंसाली ने किया।

संयम साधना में अपने समय का नियोजन करें

पेटलावद।

कहा गया है कि गंगा पाप का हरण, चंद्रमा ताप का हरण और कल्पवृक्ष दीनता का हरण करता है, लेकिन संत समागम से पाप, ताप और दीनता इन सबका हरण स्वतः हो जाता है।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपा से प्राप्त चातुर्मास में श्रावक समाज को अपनी जीवनशैली को बदलना है, और चातुर्मास का भरपूर लाभ उठाना है। तप, जप, सामायिक आराधना और प्रवचन श्रवण में समय को नियोजित करना है। चातुर्मास का समय भीतर की ज्योति को प्रज्वलित करने का उत्तम समय है।

संत समागम से पाप, ताप और दीनता इन सबका हरण स्वतः हो जाता है।

हम सबके भीतर अक्षय ज्योति का स्रोत प्रवाहित हो रहा है, धर्म साधना के द्वारा उस ज्योति को प्रज्ज्वलित करना है।

उक्त आशय के उद्गार साध्वी उर्मिलाकुमारीजी ने अपने चतुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर तेरापंथ भवन मे श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष व्यक्त किए। आपने कहा हम भगवान महावीर, आचार्यश्री भिक्षु तथा आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा प्रदत्त जागरण का संदेश लेकर चतुर्मासिक क्षेत्र में आए हैं।

साध्वी मृदुलयशा जी ने कहा कि श्रावक-श्राविकाएं चातुर्मास से पूर्व अपना टारगेट सेट करें और तपस्या, जप, ध्यान, ज्ञानाराधना और संयम साधना में अपने समय का नियोजन करें और चातुर्मास को सफल बनाने का प्रयास करें।

तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ कन्यामंडल ने स्वागत गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। साध्वी वृन्द द्वारा भी सुमधुर गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री राजेश वोरा ने किया।

चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश

इरोड। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि रश्मिकुमार जी ठाणा-2 का चातुर्मास हेतु इरोड शहर में नगर प्रवेश हुआ। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण, महिला मण्डल द्वारा स्वागत गीतिका, हीरालाल चौपड़ा एवं तनसुख चौपड़ा द्वारा अभिव्यक्ति दी गयी। मुनि रश्मिकुमार जी ने भगवान महावीर की अभिवंदना में मधुर गीत का संगान कर अपने प्रवचन में कहा कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप आदि से आदमी का जीवन, धर्म से धन्य हो जाता है। मुनि प्रियांशुकुमारजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर सभा का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित था जिसमें नव निर्वाचित अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली द्वारा कार्यसमिति को शपथ दिलाई गई।

'दिव्य प्रेक्षा योग' के साथ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

बीड़।

डॉ. मुनि पुलकितकुमार जी ठाणा 2 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश तेरापंथ भवन बीड (महाराष्ट्र) में हुआ। इस अवसर पर स्थानकवासी श्रमण संघीय उपप्रवर्तक अक्षयऋषिजी आदि संतों की गरिमामय उपस्थिति रही।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के उपलक्ष में आयोजित 'दिव्य प्रेक्षा योग' रैली में तेरापंथ श्रावक समाज के साथ अन्य जैन समाज की अच्छी उपस्थिति रही। प्रवचन पंडाल में रैली पहुंचने के पश्चात स्वागत कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री द्वारा नवकार महामंत्र उच्चारण से हुआ।

मुनिश्री का स्वागत अभिनंदन करते हुए स्थानकवासी श्रमणसंघ के उपप्रवर्तक अक्षयऋषि जी, मुनि अमृतऋषि जी ने भावपूर्ण विचार प्रकट किए। मुनि पुलकितकुमारजी एवं मुनि आदित्यकुमारजी ने श्रावक-श्राविकाओं को धर्म आराधना की प्रेरणा प्रदान की।

तेरापंथ कन्या मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेयुपअध्यक्ष अरिहंत समदड़िया, तेममं अध्यक्ष सविता मरलेचा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष संजय समदड़िया एवं अनेकों वक्ताओं ने मुनिश्री के स्वागत में अपने भाव प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने नाटिका प्रस्तुत की।

मुनिश्री का परिचय रजनी समदड़िया, आभार ज्ञापन शीतल समदड़िया एवं कार्यक्रम का संचालन तपस्या समदड़िया ने किया।

बालिका संस्कार निर्माण शिविर का समापन

चेन्नई।

डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी ठाणा-4 के सान्निध्य में राज्यस्तरीय पंचदिवसीय 'बालिका संस्कार निर्माण शिविर' का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा- जिंदगी जीना है तो कुछ हुनर पैदा करना जरूरी है। जो काम सोना कर सकता है वह तांबा नहीं कर सकता।

हम अपने संस्कारों को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो उसके लिए पुरुषार्थ करना होगा। कन्याओं को शिविर में जो संस्कार प्राप्त हुए हैं उसको संजोकर रखना है। यह हमारे जीवन की खुराक है, यह संस्कार ओजपूर्ण आहार से युक्त है, जो जिंदगी भर आपके काम आएंगे। तेरापंथ महासभा, तेरापंथ सभा, तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड, शिविर संयोजिका एवं पूरे ग्रुप के सहयोग से यह पंच दिवसीय शिविर सफल हो पाया है।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी मेरुप्रभाजी के मंगलगान से हुआ। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुत दी। शिविरार्थी कन्याओं द्वारा रोचक नाटिका की प्रस्तुति दी गयी। जिसमें योगा प्रस्तुति, शिविर की कहानी अपनी जुबानी आदि ने सबका ध्यान आकर्षित किया।

मुमुक्षु कोमल, मुमुक्षु हेमश्री ने प्रेरणास्पद विचार रखें। ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष व महासभा प्रभारी विमल चिप्पड़, तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड, शिविर व्यवस्थापिका कविता रायसोनी, मनोज डूंगरवाल, हेमन्त मालू आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन भारती मुथा ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मयंकप्रभाजी ने किया।

रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

हैदराबाद

अभातेयुप द्वारा निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव राउण्ड ईयर ह्यूमनिटी थीम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा सम्पूर्ण जुलाई माह में हर दिन रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। इसी कड़ी में प्रथम कैंप का आयोजन कोठी विद्या मंदिर स्कूल, काटेदान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सचिन सोनी एवम किशन सोनी का योगदान रहा। इस कैंप में 161 यूनिट रक्त प्राप्त हुआ जिसमें महिलाओं एवं प्रथम बार रक्तदान करने वालों ने भी बड़ी संख्या में आकर रक्तदान किया। सचिन सोनी ने 108वीं बार रक्तदान किया। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, निवर्तमान अध्यक्ष निर्मल दुगड़, उपाध्यक्ष मनीष पटावरी, आयाम संयोजक रक्तवीर मनोज जैन, रिदम हैदराबाद संयोजक श्रेणिक गोलछा की कार्यक्रम में विशेष उपस्थिथि रही। अभातेयुप सदस्य आशीष दक एवम राहुल श्यामसुखा तेलंगाना संयोजक के रूप में इस कार्यक्रम में अपनी सेवाएं दे रहें हैं।

सूरत

तेरापंथ युवक परिषद्, सूरत द्वारा सत्र 2024-25 का प्रथम रक्तदान कैंप जीएसटी ऑफिस, चलथान में आयोजन किया गया। इस रक्तदान कैंप में कुल 43 रक्त यूनिट एकत्रित हुए। इसमें जीएसटी कमिश्नर विश्वनाथ और फोस्टा अध्यक्ष कैलाश हकीम की मुख्य उपस्थिति रही। सरदार वल्लभ भाई ब्लड बैंक की सहभागिता रही। अध्यक्ष अभिनंदन गादिया एवम् मंत्री सौरभ पटावरी, एमबीडीडी टीम एवम् कार्यकारणी सदस्यों का अथक श्रम रहा।

वापी

अभातेयुप के तत्वावधान मे तेयुप वापी द्वारा जी.एस.टी ऑडिट स्टेशन वापी में जी.एस.टी कर्मचारियों के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर मे 35 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

चलथान

तेरापंथ युवक परिषद चलथान, रोटरी क्लब ऑफ कड़ोदरा एवं पुलिस समन्वय के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन चलथान में किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तेरापंथ सभा चलथान अध्यक्ष विनोद खाब्या ने कार्यक्रम में पधारे सभी आगन्तुकों और समस्त रक्तदाता एवं सरदार पटेल ब्लड बैंक बारडोली का स्वागत किया। रक्तदान शिविर में 28 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। रक्तदान शिविर में रोटरी क्लब ऑफ कड़ोदरा अध्यक्ष केतन शाह एवं उनके साथी, पुलिस समन्वय की अध्यक्ष दीपिका डाभी एवं उनकी टीम, तेरापंथ सभा और तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष दीपक खाब्या की विशेष उपस्थिति रही। तेयुप चलथान एमबीडीडी प्रभारी अमित नौलखा ने पधारे सभी मेहमानों एवं रक्तदाताओं का आभार ज्ञापन किया।

लिलुआ

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ ने रक्तदान शिविर एवं नेत्रदान जागरूकता अभियान का आयोजन फोरम परवेश बेलूड़ में किया। तेयुप लिलुआ अध्यक्ष अमित बांठिया और मंत्री जयंत घोड़ावत ने सभी का स्वागत किया। इस कैंप में किसी ने सजोड़े तो किसी ने सपरिवार रक्तदान किया। भाई-बहनों सहित कुल 52 व्यक्तियों ने रक्तदान किया।

अभातेयुप के एक विशिष्ट आयाम नेत्रदान की प्रेरणा भी तेयुप लिलुआ ने प्रदान की। कार्यक्रम में सहयोगी संस्था के रूप में सिद्धांत ग्रुप ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। इस कैंप में संयोजक पंकज नाहटा और संदीप दुधेड़िया का सराहनीय श्रम नियोजित हुआ।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **धुबड़ी।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी स्व. महालचंदजी व सरला देवी मालू की सुपौत्री एवं अरिहंत–उपमा मालु की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक आनन्द बरड़िया ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से नामकरण संपादित करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ कोलकाता।** सरदाशहर निवासी कोलकाता प्रवासी पंकज-ऋतु बुच्चा (पुत्र-स्व. हनुमानमल बुच्चा-प्रसन्न देवी बुच्चा) का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया एवं महेंद्र दुगड़ ने विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **बेंगलुरु।** बेंगलुरू प्रवासी तेजस शाह का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से पैलेस गुट्टहल्ली बेंगलुरु में जैन संस्कारक आदित्य मांडोत द्वारा निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से सम्पन्न करवाया गया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **चेन्नई।** रायपुर(भीलवाड़ा) निवासी, चेन्नई प्रवासी चंद्रेश, प्रीतेश सिसोदिया के साहुकारपेट स्थित नवीन प्रतिष्ठान 'प्रीतेश गोल्ड'का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित हुआ। संस्कारक स्वरूप चन्द दाँती एवं हनुमान सुकलेचा ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि सम्पन्न करवाई।

■ **पूर्वांचल-कोलकाता।** राजसमंद निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी सुभाष चपलोत एवं परिषद के पूर्व संगठन मंत्री हेमंत चपलोत के नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ का कार्यक्रम जैन संस्कारक महेंद्र दुगड़ एवं सह–संस्कारक अनूप गंग ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा संपादित करवाया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम में हुई धर्माराधना

डोंबिवली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के पावन सान्निध्य में त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि आज तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु का 299वां जन्मदिवस व 267वां बोधि दिवस है।

धर्मसंघ के बच्चे-बच्चे के मन में अपार खुशी है, आज की उपस्थिति देखकर लगता है कि पर्यूषण पर्व पर लोगों को उपासना करने का यह स्थान उपयुक्त नहीं रहेगा। आज संसार में अनेक संत और पंथ हैं परंतु तेरापंथ का अपना महत्व है इसका मुख्य कारण अनुशासन है। इस धर्म संघ में इतने बौद्धिक और युवा साधु-साध्वियों की बहुलता होने पर भी एकरूपता है, यह सब भिक्षु बाबा की सूझबूझ का प्रताप है। आज के दिन काफी भाई-बहन उपवास करते हैं यह उनकी स्वामीजी के प्रति हार्दिक श्रद्धा का प्रतीक है। मुनिश्री ने उपवास करने वालों प्रेरणा देते हुए कहा कि अगर शारीरिक शक्ति और परिवार की अनुकूलता हो तो तेले का लक्ष्य बनाएं व आज से ओम भिक्षु की 2 महीने तक अर्थात भादवा सुदी तेरस तक 21 माला नियमित पूर्व या उत्तर दिशा में स्थित होकर सामायिक सहित जाप करें, जिससे सवा लाख का जाप हो सके। कार्यक्रम में मुनि नमिकुमार जी ने 31 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि अमनकुमार जी, मुनि मुकेशकुमार जी, भगवतीलाल सोनी, संजय खाब्या, दिनेश श्रीश्रीमाल, सुरेश बैद, राजू हीरावत, सीमा इंटोदिया, भावना चौधरी आदि ने भावपूर्ण प्रस्तुतियां की।

द्वितीय दिवस - आषाढ़ सुदी चतुर्दशी के अवसर पर मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि बारह महीने में आषाढ़ सुद चौदस का अपना विशेष महत्व है, यह केवल साधु-साध्वियों के लिए ही नहीं अपितु श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी महत्वपूर्ण है। आज के दिन पक्खी होने से इसका ज्यादा महत्व हो गया है, अर्थात आज प्रतिक्रमण के पश्चात चातुर्मास की शुरुआत हो जाती है। साधु-साध्वी या श्रावक-श्राविका विशेष साधना का क्रम बनाते हैं। मुनिश्री ने हाजरी का वाचन किया।

तृतीय दिवस- मुनि कमलकुमार जी ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि आज चातुर्मास का प्रथम दिवस है, आषाढ़ी पूर्णिमा है। आज के दिन केलवा, मेवाड़ में आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा स्वीकार की और तेरापंथ की स्थापना हो गई। आचार्य भिक्षु समयज्ञ थे उन्होंने शुभ समय में इस संघ की स्थापना की। आज तेरापंथ धर्म संघ देश-विदेश में फैल चुका है। आज मंत्र दीक्षा का भी कार्यक्रम है, तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में इसका आयोजन किया गया है।

यह कार्यक्रम आचार्य श्री तुलसी के शासनकाल में प्रारंभ हुआ, तब से आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन बच्चों को मंत्र दीक्षा दी जाती है जिससे हमारी संस्कृति और संस्कारों की सुरक्षा होती रहे। अच्छी संख्या में भाई-बहनों ने मंत्र दीक्षा के साथ गुरु धारणा भी ग्रहण की। अनेकों ने तेले की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

मुनिश्री की प्रेरणा से चल रही पचरंगी के अंतर्गत भी कई सदस्यों ने चोले व पंचोले का भी प्रत्याख्यान किया। युवक परिषद के मंत्री संजय खाब्या ने सबका आभार व्यक्त किया। मुनि नमि कुमार जी ने 34 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

आचार्य श्री भिक्षु के 299वें जन्म दिवस एवं 267वें बोधि दिवस पर विविध आयोजन

लाडनूं

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारीजी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का 299वां जन्म दिवस एवं 267वां बोधि दिवस का आयोजन हुआ। तेरापंथ सभा से मंत्री राकेश कोचर, तेरापंथ महिला मंडल से अध्यक्ष सुमन गोलछा एवं कार्यसमिति सदस्य सरिता चोरड़िया ने गीतिका द्वारा एवं उपासिका डॉ. सुशीला बाफना एवं युवक परिषद के मंत्री राजेश बोहरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी सुनन्दाश्रीजी, साध्वी जागृतयशाजी, साध्वी आस्थाश्रीजी, साध्वी विज्ञप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति प्रदान की। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने आचार्यश्री भिक्षु के अवदानों के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की कर्मठ कार्यकर्ता रेणु कोचर में किया। विभिन्न सभा संस्था के पदाधिकारी गण, कार्य समिति एवं सदस्य सहित अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

छोटी खाटू

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु का 299 वां जन्मदिवस एवं 267वें बोधि दिवस का समायोजन 'शासनश्री' साध्वी कमलप्रभाजी के सान्निध्य में छोटी खाटू तेरापंथ सभा भवन में बड़े उत्साह के साथ किया गया। साध्वी कमलप्रभा जी ने कहा महापुरुष जब धरा पर आते हैं तो तिथि, वार, मुहूर्त सब कुछ शुभ बन जाते हैं। आचार्य भिक्षु के जीवन के अनेक प्रसंग तेरस और 13 के अंक के साथ जुड़े हुए हैं। तेरापंथ के पंच तीर्थ में राजनगर बोधि स्थल का विशेष महत्व है क्योंकि वहां के श्रावकों की धर्म क्रांति ही तेरापंथ के उदय में निमित्त बनी। साध्वीश्री ने बोधि का महत्व बताते हुए बोधि प्राप्ति की प्रेरणा दी। साध्वी वृंद ने 'भिक्षु अलबेले अवधूत' गीत की सुमधुर प्रस्तुति दी। साध्वी जगतयशाजी ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व एवं कर्तव्य की गाथा को उजागर किया। तेरापंथ सभा के मंत्री राजेश बेताला ने स्वामी जी को टॉप महापुरुष बताते हुए उनके जैसे टॉप बनने बनने के रहस्य बताए। महिला मंडल ने गीतिका के द्वारा आराध्य को भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेरापंथ युवक परिषद छोटी खाटू और कुशल संचालन साध्वी प्रियदर्शनाजी ने किया। कार्यक्रम में श्रावक श्राविकाओं की अच्छी उपस्थित रही।

विलेपार्ले

साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी के सान्निध्य में क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु के जन्म दिवस को तप, त्याग के उपहार से मनाया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण नमस्कार महामंत्र व वीतराग स्तुति से हुआ। चेतन जैन व महेन्द्र वड़ाला ने मंगल गीत का संगान किया। साध्वी संचितयशाजी, साध्वी जागृतप्रभाजी व साध्वी रक्षितयशाजी ने शब्द चित्र के माध्यम से आचार्य भिक्षु के जीवन का चित्रण किया। सांताक्रुज महिला मण्डल की अध्यक्ष मोना जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी शकुन्तलाकुमारीजी ने कहा-

आचार्य भिक्षु सत्य के महान आराधक संत थे। उनके जीवन की पोथी का हर पृष्ठ, हर अक्षर सत्य की परिक्रमा करता रहा। आपने कहा - फौलादी संकल्प के धनी आचार्य भिक्षु विरोधी ज्वालाओं में तपकर कुंदन बनकर निखरे। युवक परिषद की नवीन कार्य समिति के शपथ समारोह के उपलक्ष में तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। चेतन जैन ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। पूर्वाध्यक्ष अरविंद जैन ने वतर्मान अध्यक्ष महेन्द्र वड़ाला व मंत्री रॉकी जैन की टीम को शपथ ग्रहण करवाई।

अध्यक्ष महेन्द्र वड़ाला ने तन, मन धन से संघ सेवा का संकल्प किया। कार्यक्रम का संचालन अंधेरी महिला मंडल की पूनम परमार ने किया। संघ गान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

जोरावरपुरा

'शासनश्री' साध्वी शशिरेखाजी आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु का 299वां जन्म दिवस कार्यक्रम समायोजित हुआ। साध्वीश्री ने कार्यक्रम की शुरुआत तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान के जप के साथ की। साध्वी मृदुलाश्रीजी ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपने भावों की समर्पित करते हुए कहा कि भिक्षु स्वामी के जीवन में अनेक प्रकार की परिस्थितियां आई पर उस महापुरुष के कदम कभी नहीं लड़खड़ाए। साध्वी रोहितयशाजी ने गीतिका का संगान किया। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बुच्चा और महिला मंडल की बहनों ने भी भक्ति सुमन अर्पित किए। साध्वी शशिरेखाजी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें जैन कुल में जन्म मिला और अतिसौभाग्यशाली हैं कि उस जैन धर्म में भी तेरापंथ संघ मिला। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

जोधपुर

साध्वी जिनबालाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन अमरनगर, जोधपुर में आचार्यश्री भिक्षु का 299वां जन्म दिवस एवं 267वां बोधि दिवस कार्यक्रम मनाया गया। इसके साथ ही अंकित भण्डारी के अठाई तप अनुमोदन कार्यक्रम भी रखा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मण्डल की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर साध्वी जिनबालाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज हम आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस व बोधि दिवस मना रहे हैं। बोधि का अर्थ है- सम्यक् बोध। साध्वीश्री ने आचार्य श्री भिक्षु के बोधि प्राप्ति के घटना प्रसंगों का उल्लेख किया। साध्वी करूणाप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य भिक्षु जन्म से ही विलक्षण थे। उनके शरीर पर अनेक शुभलक्षण अंकित थे जो उनके 2000 वर्षों तक विश्व विख्यात होने का संकेत करते थे। साध्वी भव्यप्रभाजी ने तप शब्द को परिभाषित करते हुए का कि जो आठ प्रकार की कर्म ग्रन्थियों को तपाता है, वह तप है। साध्वी प्राचीप्रभाजी ने गीत का संगान किया। तेयुप सदस्यों ने शब्द चित्र के माध्यम से आचार्य भिक्षु जन्म दिवस, बोधि दिवस एवं तप अनुमोदन पर प्रकाश डालते हुए अपने युवा साथी के तप का अनुमोदन किया। इस कार्यक्रम में तेरापंथ प्रवक्ता महावीर राज गेलड़ा विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्तर्गत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश जीरावला, तेयुप अध्यक्ष मिलन बांठिया, मंत्री देवीचंद तातेड़, तेममं अध्यक्षा दिलखुश तातेड़, सुमन भण्डारी, ज्योति भण्डारी, जगदीश धारीवाल आदि ने भी गीत, वक्तव्य, मुक्तक आदि के माध्यम से अपने-अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन विकास चोपड़ा एवं जिनेन्द्र बोथरा ने किया।

उदयपुर

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु का 299वां जन्म दिवस एवं 267वां बोधि दिवस का कार्यक्रम समायोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि एक असाधारण बहुआयामी व्यक्तित्व का नाम था आचार्य भिक्षु। आर्य भिक्षु एक सिंह पुरूष थे। वे सिंह के सपने के साथ मां दीपा और पिता बल्लूशाह के प्रांगण में आए। सिंह की तरह पराक्रम करते हुए उन्होंने संन्यास ग्रहण किया। वे आजीवन शेर की तरह दहाड़ते रहे। उनकी चेतना का उद्देश्य था शिथिलाचार को पीछे धकेल नयी ज्योति का स्वागत करना।

साध्वीश्री ने आगे कहा- आचार्यश्री भिक्षु इम्प्रेसिव, क्रिएटिव, पॉजिटिव और अट्रैक्टिव पर्सनालिटी थे। महामना का जन्म दिवस बोधि दिवस के रूप में आयोजित हो रहा है। राजनगर में भिक्षु स्वामी को अन्तदृष्टि मिली। हमें भी अन्तदृष्टि मिले। साध्वी वृंद ने 'कैसे मनाएं भिक्षु बाबा का जन्मदिन' गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने किया। पंकज भंडारी, तेरापंथ महिला मंडल की उपाध्यक्ष मंजू इंटोदिया, किशोर मंडल सहसंयोजक नमन सोनी आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से दी।

मुख्य अतिथि चेतना भाटी ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल नाहटा ने तथा आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष भूपेश खमेसरा ने किया।

जेबीएन तथा टीपीएफ के संयुक्त तत्वाधान में गोष्ठी का आयोजन

नई दिल्ली। साध्वी कुन्दनरेखा के सान्निध्य में एवं जे.बी.एन तथा टी.पी.एफ. के संयुक्त तत्वावधान में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

जे.बी.एन. नार्थ जोन के वाइस चेयरमैन रमन जैन ने अपने संस्था का परिचय देते हुए कहा जीतो जे.बी.एन. शिक्षा, चिकित्सा एवं व्यवसाय पर फोकस कर रही है। जे.बी.एन शिक्षा के क्षेत्र में यू.पी.एस.सी. की तैयारी करवाना, उच्चस्तरीय पढ़ाई के लिए चयनित बच्चों को विदेश भेजना, व्यवसाय में जैन समाज में व्यवसायिक शक्ति को बढ़ाना हमारा मोटिव है। दिगम्बर श्वेताम्बर की सभी शाखाओं के श्रावक गण इस संस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

दिल्ली टी.पी.एफ अध्यक्ष राजेश गेलड़ा ने आगन्तुक सभी का अपनी संस्था की तरफ से स्वागत किया। टी.पी.एफ. के श्रील लूंकड ने टी.पी.एफ. की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी संस्था स्प्रिीच्युअल, हेल्थ, इन्टैलक्चुअल, नेट वर्किंग और एजुकेशन पर अपने गुरू की आज्ञा से कार्यरत है।

लगभग 14000 सदस्यों की टीम के साथ संपूर्ण भारत में इसकी शाखाएं कार्यरत हैं। यही कारण है कि तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अपनी अलग पहचान बना रहा है। आज दो संस्थाओं का मिलन होकर कुछ अलग करने को आतुर है। साध्वी कुन्दनरेखा ने कहा टी.पी.एफ. तेरापंथ धर्म की बौद्धिक, प्रबुद्ध श्रावकों की एक बड़ी संस्था है। जहां अध्यात्म गतिविधियों के साथ स्वास्थ्य और बौद्धिक क्षमताओं का आकलन करता है। नेट वर्किंग एवं एजुकेशन के क्षेत्र में बच्चों को सहयोग करना इस संस्था का मुख्य कार्य है। आचार्य महाश्रमण का आशीर्वाद और आचार्य महाप्रज्ञ का वरदान है। जी.बी.एन. भी एक बहुत बड़ी संस्था है, विशेष रूप से यू.पी.एस.सी जैसे बड़ी पढ़ाई के लिए बच्चों को प्रेरित करता है और सहयोग भी करता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी अनेक श्रावकों का नेटवर्क के द्वारा प्रचार एवं परिचय भी इस संस्था को आगे बढ़ा रहा हैं। आज दो संस्थाएं, लगभग एक जैसा लक्ष्य लेकर चल रही हैं। गूरुदेव तुलसी के द्वारा प्रदत्त नारे की याद दिलाता है- दोनों हाथ एक साथ। यह संगोष्ठी जैन समाज के लिए नया संदेश देगी और अनेक उलझी गुत्थियों को सुलझा कर समाज के लिए बड़ा कार्य कर सकती है। जैन एकता का यह बड़ा आधार बन सकता है।

आवेश की स्थिति में निर्णय गलत होने की संभावना रहती है, अत: शांत अवस्था में ही चिंतनपूर्वक निर्णय करना चाहए।

-आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत लोगो युक्त टी शर्ट का वितरण

छत्तरपुर।

अणुव्रत सेवा प्रकल्प द्वारा आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय छत्तरपुर में 4500 विद्यार्थियों को अणुव्रत लोगो युक्त टी शर्ट का वितरण किया गया। प्रिंसिपल मनदीप कुमार ने कहा कि हमने विद्यालय के अंतर्गत हाउस के नाम भी अणुव्रत सन्देश के आधार पर ही रखे हुए हैं, जैसे सत्य, शांति, अहिंसा और सद्भाव।

अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने आये हुए गणमान्य व्यक्तियों, विद्यालय के शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया तथा विद्यालय को पर्यावरण शुद्धि अभियान के तहत 'एक पेड़ माँ के नाम' का उल्लेख करते हुए 25 पेड़ विद्यालय प्रांगण में लगवाने का आश्वासन दिया।

विद्यार्थी अभिषेक मिश्रा एवं उनकी टीम ने अणुव्रत गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी। टी शर्ट वितरण हेतु अनुदान एवं क्रियान्विति में दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष जोधराज बैद का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जोधराज बैद ने अपने विचार व्यक्त करते हुए विद्यालय को भविष्य में भी सहयोग करने की भावना प्रकट की। हीरालाल गेलडा, अनिता बैद ने सुमधुर गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन समिति के मंत्री राजेश बैंगानी द्वारा एवं मंच संचालन समिति के कार्यकारिणी सदस्य संजय कुमार द्वारा किया गया।

इस टी शर्ट वितरण कार्य के द्वारा आज अणुव्रत का प्रसार प्रचार एवं संदेश 4500 विद्यार्थियों के द्वारा उनके घरों तथा अनेकों अनेक जगह तक पहुँचाने का प्रयास अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा किया गया।

किशोर मंडल की संगठन यात्रा की बैठक

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय सहप्रभारी ऋषि दुगड़ की राजस्थान संगठन यात्रा के अंतर्गत गंगाशहर किशोर मंडल के साथ बैठक सज्जन निवास में आयोजित की गई।

ब्लू ब्रिगेड सदस्य कुलदीप छाजेड़ एवं मनन चोरड़िया की भी उपस्थिति रही। सहप्रभारी ऋषि दुगड़ को गंगाशहर किशोर मंडल की

कार्यक्रम, सेवा, संस्कार और संगठन के कार्यों से अवगत करवाया

सदस्य संख्या, वर्तमान एवं आगामी कार्यक्रम, सेवा, संस्कार और संगठन के कार्यों से अवगत करवाया गया। ऋषि दुगड़ ने गुरुदेव के सान्निध्य में सूरत में आयोजित होने वाले 19वें राष्ट्रीय किशोर मंडल अधिवेशन की जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर तेयुप गंगाशहर अध्यक्ष महावीर फलोदिया, मंत्री भरत गोलछा, कोषाध्यक्ष रोशन छाजेड़, अभातेयुप राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पीयूष लुणिया आदि की उपस्थिति रही।

बैठक के पश्चात सभी ने शांति निकेतन साध्वी सेवा केंद्र में विराजित सभी साध्वीवृंद, तेरापंथ भवन में विराजित संतों की दर्शन सेवा का लाभ लिया।

पद को भार नहीं, उपहार समझें

उत्तर पाड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद कोलकाता मेन, साउथ हावड़ा, साउथ कलकत्ता, हिंदमोटर, उत्तर कोलकाता व लिलुआ का सामूहिक शपथ ग्रहण समारोह का भव्य आयोजन उत्तरपाड़ा स्थित गणभवन ऑडिटोरियम में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित युवाशक्ति को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- संगठन को दीर्घजीवी बनाने के लिए गुरुदेव तुलसी ने निष्ठाशील, श्रमशील, सहनशील, अनुशासनशील, विनयशील नामक पंचशील दिए। प्रत्येक व्यक्ति को देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था रखनी चाहिए।

अकर्मण्य का जीवन नहीं, कर्मण्य का जीवन चाहिए। हर परिस्थिति में सहनशीलता रखनी चाहिए, वैचारिक सहिष्णुता के साथ-साथ कष्ट सहिष्णुता का भी विकास करना चाहिए। विनयशील व्यक्ति उन्नति व सफलता को प्राप्त होता है, अविनम्रता वह पाठशाला है जहां मिटना सिखाया जाता है। संघ, गुरु और समाज के प्रति समर्पण का भाव होना चाहिए। युवा व्यसन, फैशन और आडम्बर से दूर रहें। युवा वायु की तरह गतिशील रहे, जोश के साथ होश रखे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि परिषदों की शपथ विधि का समायोजन हुआ। पद को भार नहीं, उपहार समझें। दायित्व लेना सरल है, निर्वहन करना कठिन है। सब निष्ठा के साथ आत्म आराधना करते हुए संघ की सेवा करें। इस अवसर पर मुनि कुणालकुमार जी द्वारा गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल उत्तर पाड़ा के मंगलाचरण से हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया गया। स्वागत भाषण उत्तर पाड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष निकेश सेठिया ने दिया। नगरपालिका के चेयरमेन दिलीप यादव अपने विचार व्यक्त किये। शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ तेयुप के विभिन्न शाखाओं के अध्यक्ष मंत्रियों के विजय गीत के संगान से हुआ । अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष युवक रत्न रतन दुगड़ ने 6 परिषदों के अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण कराते हुए प्रेरणादायी वक्तव्य प्रदान किया।

इस अवसर पर तेयुप कोलकाता मेन के अध्यक्ष विवेक सुराणा ने विचार व्यक्त किए। तेयुप साउथ हावड़ा अध्यक्ष गगनदीप बैद, तेयुप साउथ कलकता अध्यक्ष मोहित बैद, तेयुप हिंदमोटर के अध्यक्ष पंकज बैद, तेयुप उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष मनीष बरडिया, तेयुप लिलुआ अध्यक्ष अमित बांठिया ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की।

आभार ज्ञापन प्रकाश गिड़िया ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

265वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर विविध आयोजन

छोटी खाटू

'शासनश्री' साध्वी कमलप्रभाजी के सान्निध्य में छोटी खाटू तेरापंथ सभा भवन में 265वां तेरापंथ स्थापना दिवस एवं मंत्र दीक्षा समारोह का आयोजन बड़े उत्साह व धूमधाम से किया गया। साध्वी कमलप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ की स्थापना अत्यंत विकट परिस्थितियों में हुई थी।

परमार्थ, पुरुषार्थ, परोपकार और पवित्रता के प्रतीक आचार्य भिक्षु एक लौह पुरुष थे। लोगों ने विरोधों की आग सुलगा कर उन्हें डराना चाहा परंतु वे आग को पानी मानकर पी गए। उनकी वैराग्यनिष्ठा आचारनिष्ठा और आत्मनिष्ठा का ही परिणाम था कि धीरे-धीरे लोग समझने लगे और यह तेरापंथ संघ बन गया।

साध्वी श्री ने मंत्र दीक्षा के महत्व और उपयोगिता के विषय में भी जानकारी दी। तेरापंथ सभा अध्यक्ष डालमचंद धारीवाल ने 'तेरापंथ महान क्यों?' विषय पर अपनी भावभिव्यक्ति दी। साध्वी वृंद, महिला मंडल छोटी खाटू आदि ने सुमधुर गीतिकाओं के माध्यम से तेरापंथ की गौरव गाथा प्रस्तुत की। कन्या मंडल ने 'बोलती तस्वीर' रेखा चित्र के माध्यम से तेरापंथ के मजबूत स्तंभ अनुशासन, श्रद्धा, समर्पण, मर्यादा, सेवा की जानकारी रोचक ढंग से दी।

साध्वी शताब्दीप्रभाजी ने सत्य घटनाओं के माध्यम से ज्ञानार्थियों को नमस्कार महामंत्र की महत्ता से परिचित कराया।

ज्ञानशाला संयोजिका मंजू देवी फुलफगर ने अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन कुसुम बैद ने किया। तेरापंथ युवक परिषद ने मंगलाचरण किया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के निर्देश अनुसार अनुशासन रैली का सुंदर व व्यवस्थित आयोजन स्थानीय सभा द्वारा किया गया।

सुजानगढ़

आषाढ़ पूर्णिमा को 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात साध्वी पल्लवप्रभाजी द्वारा मंगलाचरण किया गया। अंजू मालू ने कविता के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। तत्पश्चात सरोज देवी बैद एवं उपासिका शोभा देवी सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किये। महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई।

साध्वी मुकुलयशाजी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी मनीषाश्रीजी ने गुरू पूर्णिमा के दिन गुरू का अर्थ समझाते हुए कहा गुरु जीवन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी ने तेरापंथ की स्थापना के बारे में विस्तृत व्याख्या की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को साध्वी मनीषाश्री जी ने मंत्र दीक्षा दिलाई। तेरापंथ सभा, महिला मंडल, ज्ञानशाला आदि की अच्छी उपस्थिति रही।

उदयपुर

डॉ. साध्वी परमयशाजी ने 265वें तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर कहा कि साधना के महाकोष आराध्य भिक्षु जैसे मनस्वी यशस्वी व्यक्तित्व सदियों बाद आते हैं। आचार्य श्री भिक्षु महाभाग्यशाली थे, उन्होंने हैप्पी, हेल्थी एंड वेल्दी तेरापंथ दिया। वे महान साहित्यकार और आगमों के विशेष मर्मज्ञ थे। साध्वी मुक्ताप्रभाजी ने अनेक घटनाओं के माध्यम से तेरापंथ स्थापना दिवस पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम की शुरूआत तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचारण से हुई तत्पश्चात् महिला मंडल की मंत्री ज्योति कच्छारा, पूर्व अध्यक्षा पुष्पा कर्णावट, कैलाश बाबेल आदि ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

संबोधि

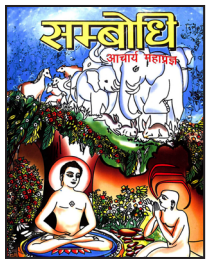

गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

वह उनके रीति-रिवाजों से अपरिचित था। जिस घर में वह ठहरा था, उसने वहां देखा, जूते बड़े सुन्दर हैं। मन प्रसन्न हो गया। उसने कहा-जूते सुन्दर हैं। तत्काल वे उसे दे दिए। उनके पास दूसरा जोड़ा नहीं था। और भी कोई सुन्दर चीज देखी और उसने कहा, वैसी ही चीज उसे मिल गई। उसने सोचा क्या बात है? घर में एक वृद्ध सज्जन थे। उसने पूछा क्या बात है? वृद्ध ने जो कहा, वह बहुत गहरे धर्म की बात है-

'चीजें चीजें हैं वे किसी की नहीं। जिनके पास हैं उनके लिए अब व्यर्थ हो गई हैं, कोई आकर्षण नहीं रहा, किन्तु जिसके पास नहीं हैं वह सम्मोहित हो रहा है, लेने को ललचा रहा है। यदि उसे नहीं मिलेगी तो सम्मोहन-आकर्षण टूटेगा नहीं।

'जो चीज हमारी है हम मालिक हैं तो उसकी मालकियत तभी है जब किसी को दे देते हैं, अन्यथा उसके गुलाम होते हैं।' वर्ष भर में एक दिन आता है जिस दिन सभी घरों में अनावश्यक और आवश्यक वस्तुओं की छंटनी कर दी जाती है और फिर अनावश्यक लाते ही नहीं।

मेघः प्राह

११. अगारिणां कथं धर्मो, व्यापृतानाञ्च कर्मसु ।
गृहिणां यदि धर्मः स्यादनगारो हि को भवेत् ॥

मेघ बोला–भंते ! गृहस्थी में लगे हुए गृहस्थों में धर्म कैसे हो सकता है? यदि गृहस्थ भी धर्म के अधिकारी हों तो फिर साधु कौन बनेगा ?

भगवान् प्राह

१२. सत्यं देवानुप्रियैतद्, मुमुक्षा यस्य नोत्कटा।
स वृत्तिमनगाराणां, न नाम प्रतिपद्यते॥

भगवान् ने कहा–देवानुप्रिय ! यह सच है कि जिसमें मुक्त होने की प्रबल इच्छा नहीं है, वह मुनि धर्म को स्वीकार नहीं करता।

१३. मुमुक्षा यावती यस्य, समतां तावतीं श्रितः।
आचरति गृही धर्म, व्यापृतोऽपि च कर्मसु॥

जिस गृहस्थ में मुक्त होने की जितनी भावना होती है, वह उतनी ही मात्रा में समता का आचरण करता है और जितनी मात्रा में समता का आचरण करता है, उतनी ही मात्रा में धर्म का आचरण करता है। इस प्रकार वह गृहस्थ के कार्यों में लगा रहने पर भी धर्म की आराधना करने का अधिकारी है।

मुनि वही हो सकता है, जो संसार से उद्विग्न है, जिसमें आत्म-हित की उत्कृष्ट अभिलाषा है। भोग का वियोग देखने वाला व्यक्ति ही योग का अनुसरण कर सकता है। संवेग (मुक्ति-अभिलाषा) और निर्वेद (भव-विरक्ति) ही व्यक्ति को मुनि बना सकती है। इन दोनों की अपूर्णता में मुनि-जीवन संभव नहीं होता। किन्तु इससे हम संवेग और निर्वेद की आंशिकता का निषेध नहीं कर सकते। गृहस्थ में भी विचारों की तरतमता देखी जाती है। कुछ व्यक्ति गीता की दृष्टि में तमोगुणी होते हैं, कुछ रजोगुणी और कुछ सतोगुणी। सतोगुणी व्यक्ति सज्ञान प्रधान होते हैं। वे कर्तव्य अकर्तव्य के बीच विवेक कर सकते हैं। रजोगुणी व्यक्तियों में लोभ, इच्छा, भोग आदि की प्रधानता होती है। तमोगुणी अज्ञान और मूढ़ता से आच्छन्न रहते हैं। ये व्यक्ति उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकते। विचारों की इस त्रिविधता को हम धर्म और अधर्म के शब्दों में बांधे तो राजसिक और तामसिक गुण अधर्म है और सात्विक गुण धर्म है। सरलता, समता, सद्भावना, सहिष्णुता, मनःशौच आदि गुणधर्म हैं। जिन व्यक्तियों को इनका पूर्ण साक्षात्कार हो जाता है वे गुणातीत दशा को पा लेते हैं। लेकिन अभ्यासकाल में इन गुणों के आधार पर ही वे धार्मिक होते हैं। गृहस्थ भी समता, संवेग आदि भावों से धार्मिक हैं। जितने अंशों में इनका विकास है वह उतने ही अंशों में धार्मिक भी है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

ध्यान की व्यूह-रचना

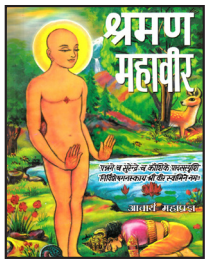

और भी न जाने कितने बवंडर आए और अपनी गति से चले गए। भगवान् के ध्यान का कवच इतना सुदृढ़ था कि वे उसे भेद नहीं पाए। यह नवनीत इतना गाढ़ा था कि कोई भी आंच उसे पिघाल नहीं पाई। सारे बादल फट गए। आकाश निरभ्र हो गया और सूरज अपनी असंख्य रश्मियों को लिए हुए विजय की लालिमा से फिर प्रदीप्त हो उठा।

भूख-विजय

भगवान् महावीर दीर्घ तपस्वी कहलाते हैं। उन्होंने बड़ी-बड़ी तपस्याएं की हैं। उनका साधना-काल साढ़े बारह वर्ष और एक पक्ष का है। इस अवधि में उनकी उपवास-तालिका यह है-

दो दिन का उपवास	-	बारह बार।
तीन दिन का उपवास	-	दो सौ उन्नीस बार ।
पाक्षिक उपवास	-	बहत्तर बार।
एक मास का उपवास	-	बारह बार।
डेढ़ मास का उपवास	-	दो बार।
दो मास का उपवास	-	छह बार।
ढाई मास का उपवास	-	दो बार।
तीन मास का उपवास	-	दो बार।
चार मास का उपवास	-	नौ बार।
पांच मास का उपवास	-	एक बार।
पांच मास पचीस दिन का उपवास	-	एक बार ।
छह मास का उपवास	-	एक बार।
भद्रप्रतिमा-दो उपवास	-	एक बार ।
महाभद्रप्रतिमा-चार उपवास	-	एक बार।
सर्वतोभद्रप्रतिमा-दस उपवास	-	एक बार।

भगवान् ने साधनाकाल में सिर्फ तीन सौ पचास दिन भोजन किया। निरन्तर भोजन कभी नहीं किया। उपवास काल में जल कभी नहीं पिया। उनकी कोई भी तपस्या दो उपवास से कम नहीं थी।

भगवान् की साधना के दो अंग हैं-उपवास और ध्यान। हमने भगवान् की उस मूर्ति का निर्माण किया है, जिसने उपवास किए थे। जिसने ध्यान किया था, उस मूर्ति के निर्माण में हमने उपेक्षा बरती है। इसीलिए जनता के मन, में भगवान् का दीर्घ-तपस्वी रूप अंकित है। उनकी ध्यान-समाधि से वह परिचित नहीं है।

'भगवान् इतने ध्यान-लीन थे, फिर लम्बे उपवास किसलिए किए?'

'उन दिनों दो धाराएं चल रही थीं। कुछ दार्शनिक शरीर और चैतन्य में अभेद प्रस्थापित कर रहे थे। कुछ दार्शनिक उनमें भेद की प्रस्थापना कर रहे थे। महावीर भेद के सिद्धांत को स्वीकार कर उसके प्रयोग में लगे हुए थे। वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि शरीर की तुलना में सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्म शरीर की तुलना में मन और मन की तुलना में आत्मा की शक्ति असीम है। उनकी लम्बी तपस्या उस प्रयोग की एक धारा थी। यह माना जाता है कि मनुष्य पर्याप्त भोजन किए बिना, जल पिए बिना बहुत नहीं जी सकता और श्वास लिये बिना तो जी ही नहीं सकता। किन्तु भगवान् ने छह मास तक भोजन और जल को छोड़कर यह प्रमाणित कर दिया कि आत्मा का सान्निध्य प्राप्त होने पर स्थूल शरीर की अपेक्षाएं बहुत कम हो जाती हैं। जीवन में नींद, भूख, प्यास और श्वास का स्थान गौण हो जाता है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

स्वार्थ-विलय का प्रयोग

आगमों में वैयावृत्त्य के दस प्रकार प्रज्ञप्त हैं-

१. आचार्य का वैयावृत्त्य

२. उपाध्याय का वैयावृत्त्य

३. स्थविर का वैयावृत्त्य

४. तपस्वी का वैयावृत्त्य

५. ग्लान का वैयावृत्त्य

६. शैक्ष (नवदीक्षित) का वैयावृत्त्य

७. कुल का वैयावृत्त्य

८. गण का वैयावृत्त्य

९. संघ साधुओं (साधुओं के समूह विशेष) का वैयावृत्त्य

१०. साधर्मिक का वैयावृत्त्य।

वैयावृत्त्य करने के चार कारण विज्ञप्त हैं-

१. समाधि पैदा करना।

२. विचिकित्सा दूर करना, ग्लानि का निवारण करना।

३. प्रवचन वात्सल्य प्रकट करना।

४. सनाथता-निःसहायता या निराधारता की अनुभूति न होने देना।

आचार्य आदि वैयावृत्य के दस स्थान या पात्र हैं। उनकी सेवा किस प्रकार की जानी चाहिए, इसका दिशानिर्देश तेरह कार्यों के माध्यम से किया गया है। वे इस प्रकार हैं-

१. भोजन लाकर देना।

२. पानी लाकर देना।

३. शय्या अथवा संस्तारक देना।

४. आसन देना।

५. क्षेत्र और उपधि का प्रतिलेखन करना।

६. पादप्रमार्जन करना अथवा औषधि पिलाना।

७. आंख का रोग उत्पन्न होने पर औषधि लाकर देना।

८. मार्ग में विहार करते समय उनका भार लेना तथा मर्दन आदि करना।

९. राजा आदि के क्रुद्ध होने पर उत्पन्न क्लेश से निस्तार करना।

१०. शरीर को हानि पहुंचाने वाले, यथा-उपाधि को चुराने वालों से संरक्षण करना।

११. बाहर से आने पर दंड (यष्टि) ग्रहण कर रखना।

१२. ग्लान होने पर उचित व्यवस्था करना।

१३. उच्चारपात्र, प्रश्रवणपात्र और श्लेष्मपात्र की व्यवस्था करना।

वैयावृत्त्य के दस स्थानों में तीर्थंकर के वैयावृत्य का कोई अलग से उल्लेख नहीं है। आचार्य में तीर्थंकर भी समाविष्ट हो जाते हैं। आचार्य का अर्थ है- स्वयं आचार का पालन करने वाला तथा दूसरों से उसका पालन कराने वाला। इस दृष्टि से तीर्थंकर स्वयं आचार्य होते हैं।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री रामसुखजी (सूरवाल) दीक्षा क्रमांक : 105

मुनिश्री उच्चकोटि के त्यागी, विरागी और तपस्वी थे। उनके तप आदि का विवरण इस प्रकार है : संवत् 1892 में आपने लगातार 19 दिन का चौविहार तप किया, 20वें दिन पानी पिया और 21 वें दिन फिर चौविहार रखा। साधुओं में उनका वह तप सर्वोत्कृष्ट था। 1893 में 63 दिन का तप किया, उसमें केवल 12 दिन पानी पिया और 51 दिन चौविहार किये। 1894 में 68 दिन का तप किया, उसमें केवल 11 दिन पानी पिया और 57 दिन चौविहार किये। 1895 में पहले एकान्तर तप किया। पारणे में एक बार आहार करते। बाद में बेले-बेले किया। पारणा केवल एक बार तीसरे प्रहर में करते। उसमें भी पारणे के लिए विगय तथा व्यंजन (साग, सब्जी) मांगने का त्याग था। इस साल आपने 45 दिन का तप किया। आप उष्णकाल में आतापना लेते और शीतकाल में शीत को सहन करते।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संक्षिप्त खबर

दो दिवसीय मेडिकल कैंप का आयोजन

टिटिलागढ़। स्थानीय तेरापंथ भवन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ ने दो दिवसीय मेडिकल कैंप का आयोजन किया। मुख्य अतिथि स्थानीय नवनिर्वाचित विधायक नवीन जैन के कर कमलों से शिविर का शुभारंभ हुआ। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात मुख्य अतिथि नवीन जैन, विशिष्ट अतिथि माणकचंद जैन, डॉक्टर घनश्याम जैन एवं डॉक्टर्स की टीम का महिला मंडल की ओर से अंग वस्त्र ओढ़ाकर स्वागत किया गया। बरगढ़ से पधारे तीन सदस्य टीम, योग गुरु अजीत मिश्रा, पंचानन विद्या एवं साइमन नंद सिंह की टीम ने वैदिक पद्धति, पुरातन चिकित्सा, ऑक्सीजन थेरेपी, नाड़ी चिकित्सा, कर्ण बिन्दु चिकित्सा, नाड़ी परिक्षण के द्वारा इलाज किया। शिविर में लगभग 160 लोगों का इलाज किया गया। आसपास के क्षेत्र केसिंगा, बेलगांव, कांटाभांजी, सिंधी, विशाखापट्टनम आदि 20 गांवों के लोग इलाज कराने पहुंचे थे। डॉ. घनश्याम जैन ने कैंसर की बीमारी के बारे में विस्तार से बताते हुए इसके कारण और निवारण की जानकारी दी।

लोगस्स कल्प अनुष्ठान का आयोजन

गंगाशहर। साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद, गंगाशहर द्वारा 'लोगस्स कल्प अनुष्ठान' का आयोजन किया गया। साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने लोगस्स की महत्ता एवं भव्यता का व्याख्यान करते हुए कहा कि लोगस्स पाठ बहुत ही चमत्कारी है, इसका रोज जप करना चाहिए। अनुष्ठान में 200 से अधिक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। सभी के सामूहिक स्वर से शांति निकेतन का प्रांगण लोगस्स जप से गुंजायमान होते आध्यात्मिक- सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण बना रहा था। तेयुप अध्यक्ष महावीर फलोदिया ने बताया कि इस अनुष्ठान में सभी कार्यकर्ताओं ने पूरे मनोयोग से सफल बनाने में अपना योगदान दिया। कार्यक्रम के प्रभारी मांगीलाल बोथरा ने बताया कि गंगाशहर तेरापंथी सभा, युवक परिषद प्रबंध मंडल, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल की पूरी टीम एवं सभी संस्थाओं के पदाधिकारी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

आचार्य भिक्षु का जन्म है एक धर्मक्रान्ति

पीतमपुरा। साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला में आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस एवं बोधि-दिवस श्रावक समाज की विशाल उपस्थिति में मनाया गया। साध्वीश्री ने अपने आराध्य को श्रद्धाः सुमन अर्पित करते हुए कहा- तेरापंथ के तेजस्वी दिनकर का नाम है- आचार्य भिक्षु। अनुशासन व मर्यादा के शिखर पुरूष हैं- आचार्य भिक्षु। आचार्य भिक्षु का जन्म धर्मक्रांति का जन्म है। आचार्य भिक्षु का जन्म सत्य, संयम, तप व त्याग-तपोबल का जन्म है। आचार्य भिक्षु का जन्म आचारनिष्ठा व शुद्ध साध्वाचार का जन्म है। सिंह स्वप्न के साथ माँ दीपा की रत्नकुक्षि से जन्म लेकर जीवन भर शेर की तरह दहाड़ते रहे। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने बोधि-दिवस पर आपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म बोधि का जन्म है। राजनगर के श्रावकों को समझाते हुए उन्होंने आगमों का पारायण किया। आगम रूपी महासागर में अवगाहन करने पर उन्हें बोधि रूपी मोती प्राप्त हुए। उसी बोधि की निष्पत्ति है- हमारा यह गौरवशाली तेरापंथ। साध्वी कर्णिकाश्रीजी व साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा भावांजलि अर्पित की। साध्वी समत्वयशाजी ने मंच का कुशल संचालन किया। पीतमपुरा सभा के मंत्री विरेन्द्र जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। त्रिनगर सभा के भाई-बहनों ने सुमधुर व सरस शैली में मंगल संगान किया। भिक्षु भक्त मंडल ने जोशीले स्वरों में भिक्षु भक्ति में स्वरांजलि अर्पित की।

प्रेरणा यात्रा के साथ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

चिकमंगलूरु।

कर्नाटक के चिकमंगलूर में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा 3 का प्रेरणा यात्रा के रुप में तेरापंथ भवन में उत्साह के साथ श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति में प्रवेश हुआ।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, टीपीएफ, अणुव्रत समिति एवं जैन समाज के गणमान्य सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। प्रेरणा यात्रा के प्रथम क्रम में ज्ञानशाला, कन्या मंडल, महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, टीपीएफ अणुव्रत समिति के सदस्यों ने अपने-अपने गणवेश में यात्रा की शोभा बढ़ाई। यात्रा में नगर के विधायक एचडी तिम्मया ने मुनिवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रेरणा यात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से होती हुई तेरापंथ भवन में स्वागत समारोह में परिवर्तित हुई।

स्वागत समारोह का शुभारम्भ नमस्कार महामन्त्र से हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मण्डल ने किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष महेन्द्र डोसी ने मुनिवरों एवं आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया। पूर्व अध्यक्ष ताराचन्द सेठिया ने मुनिवृंद का परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ताराचन्द बरलोटा, मलनाड समिति अध्यक्ष महावीर भंसाली एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने स्वागत में अपने उत्साह को प्रकट किया। स्वागत समारोह में चतुर्मास के निमित्त मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि भव्य कुमार जी एवं मुनि जयेशकुमार जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति आत्मीय कृतज्ञता प्रकट करते हुए मंजिल पर पहुंचने की प्रसन्नता व्यक्त की। मुनित्रय ने चातुर्मास काल में करणीय उपासना एवं कार्यों को करने की सबल प्रेरणा प्रदान की।

चातुर्मासिक प्रवेश

पाली। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुमति कुमार जी ठाणा 3 का चातुर्मासिक प्रवेश तेरापंथ सभा भवन मंडिया रोड, पाली में हुआ। स्वागत समारोह में मुनि सुमति कुमारजी ने अपने संबोधन में ज्ञान, दर्शन, चरित्र व तप में विकास करने एवं देव, गुरु व धर्म में विश्वास रखने की प्रेरणा देते हुए शुद्ध आचरण एवं त्याग का महत्व बताया। मुनि देवार्य कुमारजी ने श्रावक श्राविकाओं को तत्वज्ञान की विशेषता बताई।

स्वागत समारोह में तेरापंथ महिला मंडल से बहनों ने मंगलाचरण किया। महासभा से गौतम छाजेड, तेरापंथ सभा से प्रकाश कांकलिया, तेयुप अध्यक्ष विपिन बांठिया, महिला मंडल की मंत्री सीमा मरलेचा, अणुव्रत समिति की मंत्री प्रियंका चौपड़ा, तेरापंथ किशोर मण्डल के संयोजक दीप लुणिया ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मंच संचालन पीयूष चोपड़ा ने किया।

ज्ञान का मंदिर और संस्कारों का घर है ज्ञानशाला

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा- 3 के सान्निध्य में साउथ हावड़ा स्तरीय सामूहिक ज्ञानशाला एवं सम्मान समारोह का आयोजन लक्ष्मी एक्वा स्पेस कम्युनिटी हॉल में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। ज्ञानार्थियों को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- जीवन निर्माण में संस्कारों का बहुत बड़ा महत्त्व है। ज्ञानशाला संस्कार प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। ज्ञानशाला ज्ञान का मंदिर है, संस्कारों का घर है। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चे अपने सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। मुनिश्री ने आगे कहा- गुरुदेव तुलसी ने युग की नब्ज को देखकर नौनिहाल बाल पीढ़ी को संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला का महत्त्वपूर्ण उपक्रम दिया। मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र की महत्ता बताते हुए कहा कि यह मंत्र ऊर्जा मंत्र है, इसमें अद्भुत शक्ति है। मुनिश्री ने आगे कहा- भोजन करते समय टी.वी. व मोबाइल से दूर रहें। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने भी बच्चों को संबोधित किया। सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा, ज्ञानशाला संयोजक प्रदीप पुगलिया, हेमलता बैंगवाणी, पंकज दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन वीणा जैन ने किया। सभा भवन ज्ञानशाला, आंदुल ज्ञानशाला, संगम ज्ञानशाला, गंगेज ज्ञानशाला, आइडियल ज्ञानशाला, विक्रम विहार, ज्ञानशाला, राघव ज्ञानशाला, विवेक विहार ज्ञानशाला, पंचशील ज्ञानशाला, श्री अपार्टमेंट ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका का तेरापंथ सभा द्वारा सम्मान किया गया। परीक्षा एवं प्रतियोगिता में विजेता ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

चातुर्मास में रहे आत्मा का दर्शन करने का प्रयत्न

शास्त्री नगर, दिल्ली।

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशानुसार 'शासनश्री' साध्वी ललितप्रज्ञा जी ठाणा-3 का तेरापंथ भवन, शास्त्री नगर में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि चातुर्मास में व्यक्ति को अपनी लाइफ स्टाइल बदलनी चाहिए। चातुर्मास में आत्मा का दर्शन करने का प्रयत्न रहे। चतुर्मास में त्याग, तप, संयम, उपशम भाव की साधना, अनासक्ति, स्वाध्याय, सामायिक, दर्शन, सेवा, व्याख्यान श्रवण में समय का सदुपयोग करें। रात्रि भोजन का भी परिहार करें जितना समय धर्म ध्यान में लगा सकें लगाएं। प्रतिकमण कर पापों की आलोचना कर वीतराग पथ पर अग्रसर होते रहें।

साध्वी अमितश्रीजी ने कहा अतीत को भुलाकर वर्तमान में जीकर, भविष्य के निर्माण का नाम है चातुर्मास। साध्वी कर्तव्यजी ने सत्संग की गरिमा बताकर समय के सदुपयोग की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र उच्चारण एवं भगवान ऋषभ के जप द्वारा किया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण किया।

बाबुलाल दुगड़, उपाध्यक्ष दिल्ली सभा, राजेन्द्र बैंगानी मंत्री, अणुव्रत समिति, राजा कोठारी, क्षेत्रीय सभा अध्यक्ष, कन्या मण्डल, महिला मण्डल आदि द्वारा स्वागत अभिनन्दन किया गया। आभार ज्ञापन पवन बैंगानी द्वारा एवं कुशल संचालन पवन चौपड़ा द्वारा किया गया।

श्रावक कार्यकर्ता की पहचान है त्याग, शील और गुण

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमारजी ठाणा -3 के सान्निध्य में श्रावक कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- किसी भी संगठन के विकास में कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। कार्यकर्ता का सामान्य अर्थ है- कार्य करने वाला। जो स्वहित के साथ परार्थ व परमार्थ का भाव रखता है वह सच्चा कार्यकर्ता होता है।

कार्यकर्ता में भी श्रावक कार्यकर्त्ता का होना जरूरी है। जो श्रद्धावान है, विवेकवान है, क्रियाशील व कर्तव्य के प्रति जागरूक होता है, वह श्रावक होता है। मुनिश्री ने आगे कहा- जिस प्रकार सोने की पहचान घिसकर, काटकर, पीटकर तथा तपाकर की जाती है उसी प्रकार श्रावक कार्यकर्ता की पहचान त्याग, शील, गुण, कर्म से होती है। त्याग से ही श्रावकत्व, जैनत्व झलकता है। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा- कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण से कौशल विकसित होता है।

मुनि कुणालकुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने सामूहिक गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने स्वागत भाषण दिया। आभार ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष बजरंग डागा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

आगम वाणी का ऑक्सीजन डिस्चार्ज एनर्जी को रिचार्ज करता रहे

उदयपुर।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरूदेव के आदेश से हम अहमदाबाद से स्मार्ट सिटी, झीलों की नगरी, 'राजस्थान के कश्मीर' उदयपुर में चातुर्मास करने आये हैं। धर्म से हमारा आभामंडल तेजस्वी बनता है, अनमोल मानव जीवन सफल बनता है। अहिंसा, संयम और तपोमय धर्म ही हमें 'पीस ऑफ माइंड' दे सकता है। साध्वी श्री ने आगे कहा - आपने हमारा स्वागत किया, यह स्वागत हमारा नहीं, तेरापंथ के मर्यादा और अनुशासन का है, श्रद्धा और समर्पण का स्वागत है। यहां शांति, समाधि और आनंद का महायज्ञ होता रहे। आगम वाणी का ऑक्सीजन डिस्चार्ज एनर्जी को रिचार्ज करता रहे।

साध्वी वृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया एवं शब्द चित्र के माध्यम से सप्ताह के सात वारों का विश्लेषण किया। स्वागत समारोह में तेरापंथ महिला मंडल ने अपनी मधुर स्वर लहरियों के साथ मंगलाचरण कर साध्वीश्री का स्वागत किया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभाध्यक्ष कमल नाहटा, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा प्रणीता तलेसरा, किशोर मंडल संयोजक देवांश नाहर, ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता बैंगानी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सीमा बाबेल, महासभा के आंचलिक प्रभारी धीरेन्द्र मेहता आदि ने स्वागत समारोह में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री अभिषेक पोखरना ने किया।

चातुर्मास है अंतरात्मा में प्रस्थान का समय

कांदिवली।

तेरापंथ भवन में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन चातुर्मासिक चतुर्दशी के अवसर पर उपस्थित धर्म परिषद् को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- हर व्यक्ति शान्ति चाहता है, तनाव और अशान्ति किसी को पसन्द नहीं है। अपने भीतर जाना शान्ति का पैगाम है, तनाव मुक्ति का पैगाम है। भीतर की प्रेरणाा जागती है तब व्यक्ति अंतर्मुखी बनने की कोशिश करता है। चातुर्मास का समय अध्यात्म साधना का सर्वोत्तम समय है। अध्यात्म भावना पुष्ट करने के लिए संत परिवार प्रेरणा देते हैं। अध्यात्म की साधना के लिए भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव अनुकूल होने चाहिए।

चातुर्मास में प्रवेश का अर्थ है अन्तर्मुखता बढ़ने की भावना पुष्ट हो। चातुर्मास का समय अहंकार, कषाय को प्रतनु बनाने के लिए उपयोगी है।

साध्वीश्री ने उपस्थित श्रावक-श्राविका परिवार को त्याग, संयम की विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए रात्रि भोजन, सचित्त द्रव्य का प्रत्याख्यान करवाया। साध्वीश्री की प्रेरणा से सतरंगी तप का प्रारंभ भी हुआ।

सज्जन बम्ब ने मंगलाचारण का संगान किया। अर्हम् फाउंडेशन के मंत्री प्यारचन्द मेहता, प्रेक्षा प्राध्यापिका विमला दुगड़ व अल्का पटावरी ने अपने उद्गार प्रस्तुत किए। मलाड महिला मण्डल मंत्री मीना बाफणा ने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी और साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने चातुर्मास में जागरण की प्रेरणा देते हुए समूह स्वर संगान किया।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी द्वारा चतुर्दशी के अवसर पर मर्यादा का वाचन करते हुए कहा कि मर्यादा, अनुशासन, आज्ञा हमारा प्राण है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें एक गुरू परम्परा युक्त तेरापंथ संघ मिला है।

साध्वीश्री ने चातुर्मास में मौन पचरंगी, सामायिक पचरंगी, जप अनुष्ठान आदि करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने किया।

बोलती किताब

सुधि पाठकों!

इस अंक से हम तेरापंथ के यशस्वी आचार्यों की पुस्तकों का परिचय 'बोलती किताब' स्तंभ के माध्यम से शुरू करने जा रहे हैं। पुस्तक का परिचय आपको उसके स्वाध्याय की प्रेरणा देने में योगभूत बन सकेगा।

मन को स्वस्थ बनाएं

स्मृति, कल्पना और विचार- इनके द्वारा मन को समझा जा सकता है। ये तीनों मानसिक क्रियाएं हैं। ध्यान में ये तीनों बाधक भी बन सकती हैं और साधक भी बन सकती हैं। जब इनका सम्यक् नियोजन नहीं होता, तब ये बाधक बन जाती हैं और जब इनका सम्यक् 'नियोजन कर दिया जाता है तो ये साधक भी बन सकती हैं।

मन एकाग्र बनाएं : मैं मानता हूं कि मन चंचल है, पर क्या मन चंचल ही है ? मन में अपार शक्तियां भी हैं। शक्ति का स्रोत और भंडार है मन । केवल मन की चंचलता को पकड़ेंगे तो हमारा विकास नहीं हो सकेगा। एकाग्रता मन की बहुत बड़ी शक्ति है।

अहंकार पर नियंत्रण : अहंकार नहीं जाता है तो पासा पलट जाता है, नियंत्रण की बात दूर चली जाती है मन ज्यादा चंचल हो जाता है। कोरी पढ़ाई-लिखाई मन को कभी शांत नहीं करती। जिन लोगों में अपने ज्ञान का, अपनी पढ़ाई का अहंकार जाग जाता है, उनका मन और ज्यादा चंचल हो जाता है । मन पर नियंत्रण करने की चाबी उन्हें नहीं मिलती। इस चाबी को पाने के लिए साधना के मार्ग पर ध्यान के मार्ग पर चलना जरूरी है।

अनावश्यक स्मृति न करें : हमें यह ज्ञान होना चाहिए कि स्मृति कितनी की जाए? अनावश्यक स्मृति का भार वहन करेंगे तो एक दिन उसके तले दबकर मर जाएंगे। प्रिय बात को याद रखने और अप्रिय बात को भूलने की आदत डालनी चाहिए। जो कड़वे प्रसंग को आया- गया नहीं करते, वे दुःख पाते हैं।

जीवन का गणित : बुद्धि पर जरूरत से ज्यादा भरोसा आदमी को डुबो सकता है। विद्या के गणित और जीवन के गणित में बहुत अंतर होता है । चिंतन और निर्णय करना इन्द्रियों का काम नहीं है। यह काम मन का है। इसलिए आदमी को अपने मन पर ध्यान देना चाहिए। मन पर नियंत्रण खत्म हुआ तो दुर्घटना अवश्यंभावी है।

मन को पहचाने : संकल्प मन की बहुत बड़ी शक्ति है। अवधारण करना, निश्चय करना, संश्लेषण करना, विश्लेषण करना - ये सब मन की शक्तियां हैं। इन शक्तियों को नहीं पहचानेंगे तो मिलेगा क्या ?

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

महिला मंडल द्वारा सम्मान

साउथ हावड़ा। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में साउथ हावड़ा महिला मंडल द्वारा तत्वज्ञान प्रचेता, तत्व विज्ञ भाग-1, भाग-2, एवं भाग-3, कार्यकर्ता, प्रतियोगिता के विजेता आदि को सम्मानित किया गया। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि व्यक्ति धर्म का मर्म समझे। व्यक्ति केवल परभव सुधारने के लिए धर्म ना करें। धर्म के साथ वर्तमान जीवन जीने की कला भी जानें। मुनिश्री ने सभी बहनों को चातुर्मास में जागरुकता दिखाते हुए कार्य करने व धर्माराधना की प्रेरणा दी। मुनि परमानंदजी ने कहा कि ज्ञान के बिना अंधकार होता है, ज्ञानाराधना से जीवन का विकास होता है। साउथ हावड़ा महिला मंडल की परामर्शक चंद्रकला कोचर, पुष्पा धारीवाल, अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया ने पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन रेखा बेंगानी ने किया।

चातुर्मास में ज्ञान, ध्यान, तप और स्वाध्याय का होता रहे विकास

हिरियुर, कर्नाटक।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभा जी आदि ठाणा 4 का पुष्य नक्षत्र की मंगलमय वेला में तेरापंथ सभा भवन, हिरियुर में चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि भारत देश उगते सूरज का देश है। यहां भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का भी सूरज सदैव उदीयमान रहता है। उत्तर कर्णाटक व हिरियुर को चातुर्मास का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है। चातुर्मास में ज्ञान, ध्यान, तप व स्वाध्याय का विकास होता रहे। साध्वीश्री ने आराध्य की अभिवन्दना करते हुए कहा कि गुरुवर के निर्देशानुसार आज हिरियुर में चातुर्मास प्रवेश हो गया। साध्वी आत्मयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारा पहला लक्ष्य है हमारा साधुपन अच्छा पले, फिर श्रावक व्रत की आराधना में आपके सहयोगी बनें। हमारा और आपका एक ही ध्येय हो गुरु दृष्टि के आधार पर आगे बढ़ना। साध्वी उन्नतयशा जी ने चातुर्मास में अधिक से अधिक आध्यात्मिक प्रवुत्तियों को अपनाने की प्रेरणा दी। साध्वी वृन्द द्वारा सारगर्भित गीतिकाओं की प्रस्तुति ने विशाल जनसभा को प्रेरित किया।

इससे पूर्व साध्वी वृन्द ने अहिंसा रैली के साथ तेरापंथ भवन, हिरियुर में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया। नमस्कार महामंत्र से समारोह का प्रारम्भ हुआ। हिरियुर सभाध्यक्ष जयंतिलाल चौपड़ा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मुख्य अतिथि संस्था शिरोमणि महासभा के उपाध्यक्ष नरेन्द्र नखत, आँचलिक प्रभारी कमल छाजेड़ ने भी अपने विचार रखे।

इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित उत्तर कर्णाटक तेरापन्थ आँचलिक सभा के नव मनोनीत अध्यक्ष राजेन्द्र जीरावला, तेयुप अध्यक्ष रिषभ बोकड़िया, स्थानीय महिला मंडल, केशरीचन्द गोलछा, विमला कोठारी आदि ने गीतिका, वक्तव्य आदि के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी । कार्यक्रम का संचालन देवराज चौपड़ा ने किया।

साधना के क्षेत्र में समत्व की साधना है सर्वोपरि

सिरियारी।

दीक्षार्थिनी का मंगल भावना समारोह

'शासनश्री' मुनि मणिलालजी के सान्निध्य में भिक्षु समाधि स्थल के हेम अतिथि भवन प्रांगण में दीक्षार्थिनी मुमुक्षु मीनाक्षी सामसुखा-गंगाशहर का मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि मणिलाल जी ने कहा- साधना के क्षेत्र में समत्व की साधना सर्वोपरि है। समता - इन तीन अक्षरों में जीवन का सार है।

आचार्य श्री महाश्रमणजी से दीक्षित होकर स्वयं के साथ अन्य भव्य जीवों के कल्याण का लक्ष्य रखें। मुनि धर्मेशकुमार जी, मुनि चैतन्यकुमारजी ''अमन'', मुनि गिरीशकुमारजी ने बहिन मुमुक्षु मीनाक्षी के भावी जीवन के प्रति मंगल कामना करते हुए अपनी भावनाएं प्रस्तुत की।

मुमुक्षु मीनाक्षी ने अपने विचार व्यक्त किए। भिक्षु समाधि स्थल संस्थान की ओर से डॉ. बी.आर. शर्मा, व्यवस्थापक महावीर सिंह ने दीक्षार्थिनी एवं पारिवारिक जन का सम्मान किया तथा मुमुक्षु के भावी जीवन के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित की। देवीलाल मरलेचा, सुरभि नाहटा ने विचार व्यक्त किए। संचालन मुनि चैतन्य कुमारजी ने किया।

पृष्ठ एक का शेष

तेरापंथ का व्यापक अध्ययन...

नाम का उद्गम पहले हो गया, स्थापना बाद में हुई। आचार्य भिक्षु ने आज के दिन अपने संतों नव्य-भव्य दीक्षा स्वीकार की। पहले ग्रहण की गई दीक्षा को अमान्य कर केलवा में नए सिरे से सामायिक चारित्र ग्रहण कर नई दीक्षा ग्रहण की थी। इससे पहले चैत्र शुक्ला नवमी को अभिनिष्क्रमण हुआ था। दोनों दिन ज्योतिष के आधार पर अच्छे हैं। अनुमान है कि भिक्षु स्वामी ने चिन्तन पूर्वक इन दिनों का चयन किया था।

आचार्य महाप्रज्ञजी ने एक बार अपने भाषण में फ़रमाया था कि तेरापंथ की स्थापना जिस समय में हुई थी, उस कुंडली के हिसाब से 2000 वर्षों तक तेरापंथ का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकेगा। नई क्रान्ति का विरोध भी होता है। अपनी-अपनी दृष्टि है, किसी की दृष्टि में कोई सही हो सकता है, कोई गलत हो सकता है। स्तर का विरोध है, तो उसे पढ़ो और विरोध करने वालों को समझाने का प्रयास करो। विरोध करने वाले अच्छे व्यक्ति भी हो सकते हैं। विरोध-विरोध में अन्तर होता है, हर विरोध खराब नहीं होता, समझ में फर्क हो सकता है। निन्दक की बात समझकर सही लगे तो उसका परिष्कार करो। नई बात स्वीकार करेंगे तो नई बात उभर सकती है, शोध-अनुसंधान यही होता है। अनाग्रह के साथ खोज होगी तो नई चीज सामने आएगी। विरोध के दो कारण हैं, एक तो बात समझ में नहीं आई और दूसरा बिना समझे जैसे-तैसे विरोध करना। स्तरीय विरोध करने वाले को समझाया जा सकता है। उच्च दृष्टि का विरोध महत्वपूर्ण हो सकता है। तुच्छ दृष्टि का विरोध गलत हो सकता है।

आचार्य भिक्षु ने अभिनिष्क्रमण भी दोपहर में किया था, मेरा अनुमान है कि उसका भी मुहूर्त्त भी देखा होगा। तेरापंथ को समझने के लिए तेरापंथ के इतिहास को समझना भी अपेक्षित है। 'शासन गौरव' मुनिश्री बुद्धमलजी ने एक ही पोथे में नौ आचार्यों का इतिहास गुरुदेव तुलसी के समय लिख दिया था। तेरापंथ के इतिहास को पढ़ने से तेरापंथ का अच्छा अध्ययन किया जा सकता है। मुनि श्री नवरत्नमलजी स्वामी द्वारा रचित 'शासन समुद' में भी काफी इतिहास की जानकारी मिल सकती है और भी कई ग्रंथों से तेरापंथ के आचार्यों को जानने का एवं तेरापंथ दर्शन को समझने का प्रयास किया जा सकता है। जयाचार्य के ग्रन्थ 'भ्रम विध्वंसनं' से भी तेरापंथ के सिद्धांतों को समझने का प्रयास कर सकते हैं। तेरापंथ का व्यापक अध्ययन करने के लिए तीन दृष्टियों से अध्ययन करना अपेक्षित है - तेरापंथ का इतिहास, तेरापंथ का दर्शन और तेरापंथ की मर्यादा व्यवस्था। आचार्य भिक्षु से सम्बद्ध हमारा यह तेरापंथ धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु ने दर्शन और सिद्धांत दिया, श्रीमद् जयाचार्य उनके सिद्धान्तों के भाष्यकर रहे हैं। अध्ययन करने से ज्ञान चेतना झंकृत और विकसित हो सकती है। अगले वर्ष आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी से आचार्य भिक्षु त्रि-शताब्दी वर्ष शुरू हो रहा है। जिसका विरोध है, वह मानसिक संतुलन और विनम्रता व समता, शांति, मनोबल, हिम्मत रखे। विरोध भी कभी पथ प्रदर्शन कर सकता है। भूल लगे तो उसे स्वीकार कर उसका परिष्कार करने का प्रयास करें। स्तरीय विरोध का स्तरीय जवाब दिया जा सकता है। विरोध भी हमारे विकास में सहायक बन सकता है। विरोध का जवाब दो तरीके से दिया जा सकता है- एक तो उसका जवाब दो और दूसरा अच्छे से कार्य करते रहो। अपनी आलोचना का जवाब अपने अच्छे कार्यों से दो। हमारे उत्तरवर्ती परम पूज्य आचार्य हुए हैं, उन्होंने भी इस धर्मसंघ की सेवा की है। आचार्य तुलसी को हमने देखा है कितने लंबे काल तक उन्होंने धर्मसंघ का संचालन कर कितनी बड़ी सेवा की है। उन्होंने धर्मसंघ में नये-नये उन्मेष, परिवर्तन भी किए। समण श्रेणी तथा पारमार्थिक शिक्षण संस्था भी उनकी देन है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी गुरुदेव श्री तुलसी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़े थे।

हमारा धर्मसंघ विकास करता रहे, हम धर्मसंघ की सेवा और धर्मसंघ के माध्यम से औरों की भी आध्यात्मिक सेवा करने का प्रयास करें। 21 वर्षों बाद पुनः सूरत में चतुर्मास हो रहा है। भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के प्रांगण में चतुर्मास हो रहा है। पूज्य गुरुदेव ने चातुर्मास के बाद के यात्रा पथ की जानकारी भी प्रदान करवाई।

मुख्यमुनि महावीरकुमारजी ने अपने विचारों की प्रस्तुति देते हुए कहा कि आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन आचार्यश्री भिक्षु ने भव्य-नव्य दीक्षा ग्रहण की थी। आज ही के दिन जैन धर्म के नूतन संस्करण का प्रादुर्भाव हुआ था। आचार्य भिक्षु को हम जैन धर्म के पुनरुद्धारक आचार्य के रूप में देखते हैं। आज के दिन हमें एक पंथ मिला था और गुरु पूर्णिमा पर गुरु मिले थे। 264 वर्षों की यात्रा में इस धर्मसंघ को महिमाशाली, गरिमाशाली पुण्यशाली आचार्यों का कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ है, हो रहा है और मंगलकामना करते हैं कि सुदीर्घ काल तक हमें महान नेतृत्व प्राप्त होता रहे। 'तेरापंथ-मेरापंथ' बन जाए इस विषय का विवेचन करते हुए मुख्यमुनिश्री ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा रचित गीत 'स्वामी पंथ दिखाओ जी' का संगान किया। तेरापंथ के ऐतिहासिक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए मुनि श्री भारमलजी जैसा समर्पण, मुनि श्री हेमराजजी जैसी सहनशीलता, मुनिश्री खेतसीजी जैसा विनय और मुनि श्री वेणीरामजी जैसे संतुलन से प्रेरणा प्राप्त कर तेरापंथ को मेरापंथ बनाने की राह दिखाई। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि आज के दिन हमें एक महान पंथ और एक महान संत मिला था। आचार्य भिक्षु हमारे भाग्य विधाता हैं, हमारे आराध्य हैं। उनमें तीन विलक्षणताएं देखी जा सकती हैं। उनकी पहली विलक्षणता थी - वे क्रांतिकारी से अधिक शांतदर्शी थे। उनके जीवन में कई प्रकार के विरोध आए, उन्होंने विरोधी को समभाव से झेला। विरोधों से भी उनकी क्षमा, शांति, प्रसन्नता और सकारात्मकता खंडित नहीं हुई। स्थान, वस्त्र, आहार सम्बन्धी अनेक समस्याएं उनके जीवन में आई। वाणी के तीखे प्रहारों को भी अनेक बार झेला। उनकी दूसरी विलक्षणता थी - वे एक शासक थे उससे अधिक वे एक महान साधक थे। लगभग 44 वर्षों तक उन्होंने संघ को त्याग-तप और आतापना से सींचा। उनकी तीसरी विलक्षणता थी - वे आचार आधारक से अधिक सुधारक थे। संघ में शुद्ध चरित्र पले इसलिए वे हमेशा जागरूक रहते थे। मर्यादाओं का निर्माण कर आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ को तेजस्वी बनाया। आज हमें आचार्य श्री महाश्रमण जी की अनुशासना हमें प्राप्त है। हम आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा, आज्ञा निष्ठा और संघ निष्ठा को आत्मसात करने का प्रयास करें। साध्वी ऋद्धिप्रभाजी ने चतुर्मास में चलने वाली विविध विषयों की कक्षाओं के बारे में जानकारियां दी। साध्वीवृन्द व मुनिवृन्द ने स्थापना दिवस के अवसर पर पृथक-पृथक सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी। पूज्यवर के मुखारविन्द से संघ-गान का सुमधुर संगान हुआ।

पूज्यवर द्वारा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा प्रदान कर प्रेरणा प्रदान करवाई गई। अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा एवं तेयुप सूरत मंत्री सौरभ पटावरी ने मंत्र दीक्षा के अवसर पर अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। प्रज्ञा चक्षु भावेश भाटिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

साधना के साथ करनी है आनंद की यात्रा

चेन्नई।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी ने चतुर्मास हेतु तेरापंथ भवन साहुकारपेट चेन्नई में भव्य रैली के साथ मंगल प्रवेश किया।

मुनि हिमांशुकुमार जी के मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि गुरु कृपा से हमने आठ महीने तक यात्रा का आनन्द लिया है, अब चार महीने साधना के साथ आनन्द की यात्रा करनी है। चेन्नई प्रवेश से अब तक हमने श्रावकों के निवेदन पर उनके क्षेत्र व घरों का स्पर्श करते हुए उनकी प्रत्येक बात मानी है लेकिन अब श्रावक समाज की बारी है कि वह चतुर्मास के चार महीने पूरी जागरूकता के साथ संतों के सान्निध्य का न केवल स्वयं लाभ उठाएं बल्कि अन्य व्यक्तियों को भी प्रेरित करें। मुनि हेमंतकुमार जी ने कहा कि समय का महत्त्व समझते हुए उसका पूरा सदुपयोग करना चाहिए। अब परंपरागत तरीकों में बदलाव का समय है। सभी सदस्य व पदाधिकारी नाम का मोह त्याग कर काम पर ध्यान केंद्रित करें। महिला मंडल व कन्या मंडल सदस्याओं द्वारा सामूहिक गीत के पश्चात स्वागत स्वर चेन्नई सभा के उपाध्यक्ष प्रथम हरिसिंह हीरावत ने प्रस्तुत किया। महिला मंडल अध्यक्ष लता पारख, तेयुप अध्यक्ष संदीप मूथा, तेरापंथ भवन साहुकारपेट ट्रस्ट बोर्ड के प्रधान न्यासी विमल चिप्पड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया आदि ने मुनि द्वय का स्वागत-अभिनंदन करते हुए भावनाओं की अभिव्यक्ति दी। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के मंगल कामना संदेश का वाचन सभा मंत्री गजेंद्र खटेड़ ने किया। मुमक्षु दीप्ति ने अपनी भावना व वैराग्य यात्रा के संस्मरण वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन तथा आभार ज्ञापन सभा मंत्री गजेंद्र खटेड़ ने किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह

तुसरा।

समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी ठाणा 2 के सान्निध्य में ओडिशा प्रांतीय जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह तुसरा के कुंदन भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि टिटलागढ़ के विधायक नवीन जैन उपस्थित थे।

समणीजी के मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल बलांगीर द्वारा मंगलाचरण हुआ। तत्पश्चात सभा अध्यक्ष बिरेंद्र जैन ने सभी का स्वागत किया। निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश जैन ने नव मनोनीत अध्यक्ष मनोज जैन को शपथ ग्रहण करवाई। अध्यक्ष मनोज जैन ने पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई। उपस्थित व्यक्तियों ने नवनिर्वाचित विधायक नवीन जैन तथा अध्यक्ष मनोज जैन को बधाई दी।

ओडिशा सभा, तुसरा सभा, तुसरा महिला मंडल, मर्चेंट एसोसिएशन तुसरा, मारवाड़ी सम्मेलन तुसरा, तेरापंथी सभा बलांगीर, महिला मंडल बलांगीर ने नवनिर्वाचित विधायक नवीन जैन का सम्मान किया। समणी जिनप्रज्ञाजी ने अपने वक्तव्य में दोनों को बधाई देते हुए संघ तथा संघपति के प्रति समर्पित रहते हुए कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। विधायक नवीन जैन ने कहा संघ पूर्वक आचार्यश्री महाश्रमण जी का दर्शन कर ओडिशा में चातुर्मास की अरज करेंगे। निवर्तमान पदाधिकारियों ने नवीन टीम को दस्तावेज हस्तांतरित किए। आभार ज्ञापन तुसरा महिला मंडल अध्यक्ष पूजा जैन ने किया। मंच संचालन बलांगीर से सरिता मोदी तथा श्वेता जैन ने किया।

इस अवसर पर बलांगीर, रिसिड़ा, बेलपाड़ा, कांटाबाजी, कुर्सुद, सिंधिकेला, टिटलागढ़ आदि क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

सच्चा सुख पाना है तो त्यागमय जीवन जीना होगा

शांति निकेतन, गंगाशहर।

तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा मुमुक्षु मीनाक्षी सामसुखा का मंगलभावना समारोह साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में शांतिनिकेतन गंगाशहर में आयोजित किया गया। इस अवसर साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि हमारे पास दो तरह के जीवन जीने के विकल्प होते हैं। सच्चा आनंद एवं सच्चा सुख पाना है तो हमें भोग को छोड़कर त्यागमय जीवन जीना होगा।

भगवान महावीर और सेठ शालिभद्र का उदाहरण देते हुए साध्वीश्री ने कहा कि अपार सुख को त्याग कर वे संयम पथ पर आगे बढ़े। धर्म संयम में है, स्वच्छंदता में नहीं। मीनाक्षी ने संयम का मार्ग अपनाया है, जो आत्मा के कल्याण का सबसे बड़ा साधन है। मुमुक्षु मीनाक्षी को प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि साधु जीवन में ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की साधना के पथ पर आगे बढ़कर अपने जीवन को पवित्र बनाना है।

साध्वीश्री प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि मुमुक्षु मीनाक्षी ने जीवन की सच्चाई को समझकर भोग-विलास, सुख-दुःख को त्याग कर पंच महाव्रत के राजमार्ग पर प्रस्थान किया है, जो अनुकरणीय है। तुम जिस निष्ठा, आस्था, श्रद्धा से घर से विदाई ले रही हो, वह भावना आप हमेशा बनाए रखें।

साधु जीवन साधना का जीवन है, साधना हृदय की पूर्ण स्वतंत्रता से ही हो सकती है। साध्वी स्वास्थ्यप्रभा जी ने कहा कि हम तुम्हें विदाई नहीं बल्कि बधाई देते हैं।

साध्वी प्रभाश्री जी ने आत्म साधना में तल्लीन रहने की प्रेरणा दी। मुमुक्षु मीनाक्षी सामसुखा ने कहा कि बाहरी भोग विलास सब क्षणिक हैं, भीतरी शांति हमें अध्यात्म पथ पर आगे बढ़ने से ही मिलती है। उन्होंने अपने वैराग्य को पुष्ट करने वाले सभी सहयोगियों को याद किया तथा कृतज्ञता व्यक्त की।

महिला मंडल की अध्यक्ष संजू लालाणी एवं पूरी टीम ने गीतिका के माध्यम से मंगल भावना व्यक्त की। सामसुखा परिवार की बहनों ने गीतिका, कविताएं व मुक्तक के माध्यम से दीक्षार्थी बहन मुमुक्षु मीनाक्षी का अभिनंदन किया।

तेरापंथी सभा के पुर्व अध्यक्ष अमर चन्द सोनी ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। समाज की समस्त संस्थाओं ने स्वागत करते हुए मंगलमय संयम जीवन की कामना की। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री जतनलाल संचेती ने किया।

पृष्ठ एक का शेष

यह चातुर्मास ज्ञान, दर्शन...

महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम से गुरुकुलवासी व बहिर्विहारी साधु-साध्वियां गहराई से अध्ययन कर सकते हैं। तत्त्वज्ञान के पाठ्यक्रम से भी कई चारित्रात्माऐं जुड़े हुए हैं। व्याख्यान प्रवचन भी ज्ञानाराधना का माध्यम बन सकता है। गृहस्थों में ज्ञानशाला भी ज्ञानाराधना का माध्यम बन सकती है। मुमुक्षु बाईयां जैन विद्या से भी जुड़ी हुई है। जैन विश्व भारती से तो कितना साहित्य उपलब्ध होता है। जैन विश्व भारती तो साहित्य का भंडार है। लाडनूं के छोटे से भंडार में भी हमारा कितना पुरातन साहित्य भरा पड़ा है। साहित्य स्वाध्याय की शोभा है। चतुर्मास में हमारे ज्ञान का विकास हो।

उपासक श्रेणी आदि की कक्षाएं चलती हैं, वह भी ज्ञानाराधना क्रम है। जयाचार्य द्वारा रचित चौबीसी को कंठस्थ करने का प्रयास करें, प्रतिदिन एक गीत का स्वाध्याय हो जाए। चौबीसी में स्तुति के साथ तत्त्वज्ञान की बातें हैं तो आध्यात्मिक साधना की बात भी है। आगम कार्य से जुड़ी चारित्रात्माएं चतुर्मास में कार्य को आगे बढ़ाने का, आगम कार्य को निष्ठा की तरफ ले जाने का प्रयास करें।

मोक्ष मार्ग में दूसरा अंग है- दर्शन। हमारी सम्यक् श्रद्धा पुष्ट रहे, सम्यक्त्व दीक्षा भी दर्शन का एक अंग बन सकता है। यथार्थ के प्रति हमारी निष्ठा बनी रहे। जो केवली द्वारा प्रवेदित है उसको श्रद्धा के साथ स्वीकार करें। सम्यक्त्व की पुष्टि के लिए हमारे कषाय मंद हो। बिना आग्रह के तत्त्व बोध, यथार्थ को पकड़ने का प्रयास करें। चारित्रात्माएं चारित्र के प्रति जागरूक रहने का प्रयास रखें। साधु-साध्वियों में तपस्या का क्रम भी चले। गृहस्थ भी तपस्या में थोड़ा-थोड़ा कदम आगे बढ़ाएं। तपस्या में प्रेरणा का प्रभाव पड़ता है। कई मानव अपने ढंग से आगे बढ़ते हैं, और कई-कई को प्रेरणा का आलम्बन आगे बढ़ाता है। यह चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप को आगे बढ़ाने वाला हो।

समणियां तो धर्म की लक्ष्मियां है, कभी कहीं-कभी कहीं। वे भी अपनी आराधना का क्रम बढ़ाती रहें। मुमुक्षु बहनें भी अपने ढ़ंग से कार्य करती रहें। श्रावक श्राविकाएं भी आराधना करने वाले हैं। भीखमजी नखत तो गजब के व्यक्ति हैं, बारह महीने डेरे से सेवा करने वाले हैं। अधिकांश समय गुरुकुलवास में रहते हैं। अवसर मिलते ही भीखमजी नखत ने पूज्यप्रवर से दीक्षा हेतु प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने फ़रमाया - "प्रतिक्रमण याद कर लो, परिवार की आज्ञा हो, आपकी खुद की तैयारी हो, तो ना कहने का भाव नहीं है।" पूज्य प्रवर ने उन्हें साधु प्रतिक्रमण सीखने की आज्ञा प्रदान करते हुए फ़रमाया कि वर्तमान में ये विरल व्यक्ति दिख रहे हैं जो प्रायः सेवा में रहने वाले हैं। कई श्रावक-श्राविका चातुर्मास काल में यहाँ रहकर सेवा करने वाले हैं। सेवा करने वालों को व्यवस्था समिति का भी सहयोग मिल जाता है। चतुर्दशी के उपलक्ष में हाजरी का वाचन कराते हुए पूज्यप्रवर ने चारित्रात्माओं को शिक्षाएं प्रदान करवाई। मुनि ऋषिकुमारजी, मुनि केशीकुमारजी, मुनि प्रिंसकुमारजी एवं मुनि देवकुमारजी के लेख-पत्र के उच्चारण के बाद सभी साधु-साध्वियों ने लेख-पत्र का वाचन किया गया। मुमुक्षु मानवी आंचलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। आंचलिया परिवार के सदस्यों ने गीतिका का संगान किया। गुजरात के शिक्षा राज्य मंत्री प्रफुल्ल पांशेरिया ने आचार्य श्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं अपने विचार भी व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्यश्री राग-द्वेष व कषायों की आग को बुझा रहे हैं, आप श्रेष्ठ योगी हैं। आपको भौतिक पदार्थों से कोई लगाव नहीं है। आप जैसे आचार्यों का इस देश में विचरण हो रहा है, तभी यहाँ शांति है।

मुनि योगेशकुमारजी ने किशोरों एवं युवकों के लिए साप्ताहिक कार्यशाला 'उन्मेष' के बारे में जानकारी दी। उपासक श्रेणी सूरत के सदस्यों द्वारा सुमधुर गीत की प्रस्तुति हुई। अभातेयुप एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त निर्देशन में सम्यक् दर्शन कार्यशाला के बैनर का पूज्यवर की सन्निधि में अनावरण हुआ। निलेश बाफना, अर्पित नाहर, निधि सेखाणी, मधु देरासरिया, अमित सेठिया, प्रवीण भाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अभातेयुप के निर्देशन में किशोर मंडल का त्रि-दिवसीय 19 वां राष्ट्रीय अधिवेशन 'सृजन' का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल ने पूज्यवर की अभिवन्दना में गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

विद्यार्थी सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करें

पीलीबंगा। साध्वी सुदर्शनाश्रीजी के सान्निध्य में विकास ग्लोबल स्कूल (मसरूवाल) में 'सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ प्रीति डाकलिया के मंगलाचरण से हुआ। प्रेक्षा प्रशिक्षक ओमप्रकाश जैन ने साध्वीश्री के शिक्षामय एवं संयममय जीवन का परिचय दिया। साध्वी प्रणतिप्रभाजी ने विद्यार्थियों को पेंसिल की तरह तेज, उपयोगी, विनम्र और कलात्मक बनने की प्रेरणा दी। साध्वी प्रगतिप्रभाजी ने विद्यार्थियों को स्मृति विकास के प्रयोग करवाये। अनेक विद्यार्थियों ने जैन धर्म व तप के बारे में हिंदी व अंग्रेजी भाषा में अपने उद्गार प्रकट किए। प्रधानाचार्य डॉ. प्रवीण गिल ने साध्वीश्री का विद्यालय में पधारने एवं बच्चों को प्रेरित करने के लिए आभार प्रकट किया तथा शाला परिवार की तरफ से स्वागत अभिनंदन किया। सैंकड़ों बच्चों ने नशा मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया।

दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

रायपुर। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकर जी एवं मुनि नरेशकुमार जी का आध्यात्मिक मिलन वॉलफोर्ट एन्क्लेव में मंदिरमार्गी समुदाय के विनयकुशल मुनिजी व तपस्वी विरागमुनि जी आदि ठाणा से हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि सुधाकरकुमारजी ने विराग मुनि जी की तपस्या की अनुमोदना करते हुए कहा कि तप की जितनी भी अनुमोदना की जाए वह कम है। इतनी लम्बी-लम्बी तपस्या करने वाले मानव जाति में विरले ही होते हैं जो शरीर को तप रुपी आभूषण से श्रृंगारित कर, तपाकर, कुंदन बना लेते हैं। विराग मुनि जी ने कहा कि जिनशासन की प्रभावना में तप का अपना विशिष्ट योगदान होता है।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर मिली संयमी जीवन शैली की प्रेरणा

चेन्नई।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. गवेषणाश्री ठाणा 4 का पुष्य नक्षत्र की मंगलमय वेला में तेरापंथ सभा भवन, माधावरम्, चेन्नई में चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री ने कहा कि भारत देश उगते सूरज का देश है। यहां भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का भी सूरज सदैव उदीयमान रहता है।

विश्व में चार तरह के व्यक्तियों- सत्तावान, ज्ञानवान, अर्थवान और साधुओं का सम्मान होता है। बाकी तीन का तो अवसरवादिता के आधार पर सम्मान होता है, लेकिन साधु-संतों का तो सर्वत्र सदैव सम्मान होता है।

साधु नोट या वोट नहीं अपितु व्यक्तियों की खोट को निकाल उनका उद्धार करते हैं। साध्वीश्री ने कहा कि हमें अपने जीवन में तीन तरह की फैक्ट्री को लगाना चाहिए- शुगर फैक्ट्री अर्थात जबान से कटु नहीं बोलना चाहिए। माइंड में आइस फैक्ट्री लगाना, शांत सहवास से जीवन जीना चाहिए और तीसरी दिल में प्रेम की फैक्ट्री लगाना अर्थात सौहार्द भाव से रहना चाहिए। साध्वीश्री ने आराध्य की अभिवन्दना करते हुए कहा कि गुरुवर के निर्देशानुसार आज माधावरम् में चातुर्मास प्रवेश हो गया।

साध्वी मंयकप्रभाजी ने कहा कि साधु-साध्वी कषाय दल-दल में फंसे हुए व्यक्तियों को बाहर निकाल उसकी दशा और दिशा में परिवर्तन ला सकते हैं। साध्वी मेरुप्रभा और साध्वी दक्षप्रभा ने गीतिकाओं का संगान किया। मुख्य वक्ता अधिवक्ता पी. एस. सुराणा ने कहा कि दुर्लभ मनुष्य जन्म का सबसे अच्छा उपयोग संयम ग्रहण कर शुद्ध साधुपन पालन से करना चाहिए। संयम नहीं तो श्रमणों की उपासना कर, सेवा सुश्रुषा कर, वन्दन, प्रवचन-श्रवण कर भी कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं। जैन संस्कृति, भारतीय संस्कृति, शाकाहारी संस्कृति के हो रहे ह्रास, पतन को साधु संत ही रोक सकते हैं।

मुख्य अतिथि अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने कहा कि चेन्नई का समाज संघ समर्पित है, शक्ति-भक्ति से ओतःप्रोत है। इससे पूर्व प्रातःकाल शुभ वेला में प्रमिला टिम्बर से अहिंसा रैली के साथ साध्वीवृन्द ने जैन तेरापंथ नगर, माधावरम् में मंगल प्रवेश किया।

माधावरम् परिवार की बहनों ने मंगलाचरण गीत प्रस्तुत किया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। उपासक स्वरूप चन्द दाँती ने काव्यात्मक शैली में चारों साध्वियों का परिचय प्रस्तुत किया।

वर्ष 2022 के मूल्यांकन अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर चेन्नई के श्रेष्ठ ज्ञानार्थी हृदय आनन्द सेठिया को सम्मानित किया गया। तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत द्वारा एवं ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने बारह व्रतों का विश्लेषण कर संयमी का संयम से स्वागत किया। तेरापंथ एजूकेशन एण्ड मेडिकल ट्रस्ट के चेयरमैन एम.जी. बोहरा ने मुख्य वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया।

मंच का कुशल संचालन सुरेश रांका और आभार ज्ञापन माधावरम् ट्रस्ट मंत्री पुखराज चोरड़िया ने किया।

पृष्ठ 16 का शेष

अनंत काल की यात्रा...

साधुत्व बहुत बड़ी चीज़ है, इसकी सुरक्षा होती रहे। जीवन के क्षण-क्षण, कण-कण में संयम की चेतना रहे। जीवन में अध्यात्म का विकास निरन्तर होता रहे। आचार्यवर के आदेश से साध्वियों को साध्वीप्रमुखाजी की निश्रा में, मुनि वीतरागकुमारजी को मुनि दिनेशकुमारजी एवं मुनि संयमकुमार को मुख्यमुनि के नैकट्य में मुनि कुमारश्रमणजी के पास शिक्षण प्रशिक्षण के लिए सौंपा गया। पूज्यप्रवर ने फ़रमाया कि आठ दीक्षाएं हुई हैं, मानो अष्ट मंगल हो गया है, आठों कर्मों को भी क्षीण करने की दिशा में आगे बढ़ना है। आठ प्रवचन माताएं भी होती हैं, उनकी साधना-आराधना भी अच्छे ढंग से बढ़ती रहे। गृहस्थ भी त्याग-संयम की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

नवदीक्षित साधु-साध्वियों ने अपने मनोभाव श्रीचरणों में अभिव्यक्त किये। दीक्षा समारोह से पूर्व डॉ. समणी मंजुप्रज्ञाजी ने दोनों समणीजी का एवं मुमुक्षु रुचिका एवं मुमुक्षु साधना ने छः मुमुक्षुओं का परिचय दिया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन ने मुमुक्षुओं के आज्ञा पत्र का वाचन किया। मुमुक्षुओं के अभिभावकों ने आज्ञा पत्र पूज्यवर को समर्पित किये।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि हम आचार्य भिक्षु का जन्मदिवस व बोधिदिवस मना रहे हैं। ठाणं सूत्र में तीन बोधियां ज्ञान, दर्शन और चारित्र बोधि बताई गई हैं। प्रतिक्रमण में भी हम आरोग्य और बोधि की कामना करते हैं, उत्तराध्ययन में भी बोधि का उल्लेख मिलता है। आचार्य महाप्रज्ञजी फरमाते थे कि बोधि भीतर की ज्ञानात्मक चेतना है। इसके विकास से व्यक्ति हेय, ज्ञेय और उपादेय को समझ सकता है। आचार्य भिक्षु के वैशिष्ट्य का कारण था बोधि। बोधि आन्तरिक अनुभूति से आ सकती है। आचार्य भिक्षु के पास अंतर्दृष्टि थी, जिससे उन्होंने समस्याओं का समाधान किया।

दीक्षा समारोह के सन्दर्भ में साध्वीप्रमुखाश्री ने कहा कि आत्मा के विकास के लिए हमने दीक्षा को स्वीकार किया है। तेरापंथ की दीक्षा समर्पण की दीक्षा है। तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा लेने वाले, मोती बनने वालों का जीवन निखर जाता है। नव दीक्षित साधु-साध्वियों का जीवन तेजस्वी बने, सब आचार्य प्रवर की दृष्टि की आराधना करते हुए आगे बढ़ते रहें।

मुनि उदितकुमारजी ने तपस्या की प्रेरणा देते हुए अपने विचार व्यक्त किए। मीमांसा पटवा के मुमुक्षु रूप में साधना करने के निवेदन को पूज्य प्रवर ने स्वीकृति प्रदान की।

ललीता कुमठ ने पूज्यप्रवर से 33 की तपस्या के प्रत्याख्यान किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महावीर का उद्घोष है–तिण्णाणं तारयाणं

मलाड।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने अपनी सहवर्तिनी साध्वीवृंद के साथ क्षेत्रीय संभाल के दौरान 'अध्यात्म जागरण यात्रा' की। यह यात्रा काफी संघ प्रभावक बनी। इस क्रम में साध्वीश्री का लगभग 15 दिवसीय प्रवास मलाड में हुआ। कृतज्ञता के रूप में मलाड श्रावक परिवार द्वारा आयोजित मंगल भावना समारोह में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- संतों का शुभागमन जन जागरण के लिए होता है।

हमने भगवान महावीर के तिण्णाणं-तारयाणं के संदेश का पालन किया, गुरु-निर्देश का पालन किया है, इसकी मुझे प्रसन्नता है। पूज्य गुरुदेव ने जो क्षेत्र-स्पर्श करने का निर्देश हमें प्रदान किया सभी जगह हमारा जाना हुआ, यह आनन्द का विषय है। गुरुदृष्टि और ऊर्जा से हमारी यह यात्रा सम्पन्नता की ओर है। साध्वीश्री ने आगे कहा हमारे पूर्वज साधु-साध्वियों ने सघन परिश्रम से श्रावक-परिवार में संघीय भावना पुष्ट की है। श्रावक समाज से साध्वीश्री ने कहा- आप जैन अपने पूर्वजों, अभिभावकों की बदौलत हो। आश्वयकता है आज परिवारों में जैनत्व की सुरक्षा के लिए सभी अपनी भावी पीढ़ी को संस्कारी बनाएं। परिवारों में जो चिंतनीय स्थितियां बन रही हैं उसे थामने का प्रयास करें।

सम्पूर्ण मलाडवासी अध्यात्म के श्रेत्र में आगे बढ़ते रहें। चातुर्मास काल में ज्ञान, दर्शन चरित्र और तप की आराधना में संलग्न बनें। समय और शक्ति का सम्यक नियोजन करें। जिस उत्साह के साथ संस्थाओं के अपने दायित्वों का सजगता के साथ पालन किया है, इसी तरह आगे भी करते रहें।

सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन का उपयोग अधमता में न हो : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
17 जुलाई, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वाणी की वर्षा कराते हुए फरमाया कि मनुष्य जीवन बहुत महत्वपूर्ण है। चौरासी लाख जीव योनियों में एक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ जीवन मनुष्य का जन्म होता है। सर्वश्रेष्ठ होने का कारण यह है कि आध्यात्मिक उत्कृष्ट भूमिका पर केवल संज्ञी मनुष्य ही पहुंच सकता है। गुणस्थान अध्यात्म की उत्कृष्ट भूमिका है। चौदहवां गुणस्थान गर्भज मनुष्य में ही हो सकता है। पंचम गुणस्थान के बाद के सारे गुणस्थानों की भूमिकाएं केवल गर्भज मनुष्य-मनुष्यणी में ही हो सकती हैं।

पंचम गुणस्थान गर्भज मनुष्यों और गर्भज तिर्यन्चों दोनों में हो सकता है। चतुर्थ गुणस्थान तो चारों गतियों में उपलब्ध हो सकता है। तात्विक आधार पर बारहवें गुणस्थान तक मनुष्य संज्ञी रहता है। तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में वह संज्ञी न कहलाकर, नो संज्ञी-नो असंज्ञी की परिस्थिति वाला कहला सकता है। संज्ञीत्व-असंज्ञीत्व का सम्बन्ध कर्म के उदय और विलय के साथ है। संज्ञीत्व क्षयोपशम भाव से सम्बन्धित है और असंज्ञीत्व उदय भाव से सम्बन्धित है। केवलज्ञान होने के बाद चारों ही घाती कर्मों का उदय या क्षमोपशम नहीं रहता, क्षायिक भाव आ जाता है। इसलिए मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ है।

इस सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन का उपयोग व्यक्ति श्रेष्ठता में करता है या अधमता में, यह अलग बात है। चिन्तन का विषय यह है कि इस श्रेष्ठ मानव जीवन का उपयोग हम अधम रूप में न करें। मनुष्य मर कर सातवीं नरक में जा सकता है। प्रयास यह रहे की इस जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपयोग न हो तो अधमता में भी उपयोग न हो। जितना बढ़िया उपयोग कर सके, करने का प्रयास करना चाहिए। छठे-सातवें गुणस्थान तक पहुंच जाए तो भी बढ़िया उपयोग है। अगर साधु न बन सके तो पांचवे गुणस्थान, श्रावकत्व की साधना की जा सकती है। पांचवें गुणस्थान वाले भी साधक हैं, क्योंकि उनमें सम्यक्त्व युक्त देशव्रत है। चार तीर्थ में जहां साधु-साध्वी हैं, वहां श्रावक-श्राविका भी है। श्रावक-श्राविकाओं में सम्यक्त्व पुष्ट रहे, जीवन में त्याग-तपस्या रहे।

सूरत में आये हैं, चतुर्मास लगने वाला है। चतुर्मास में ज्ञान, दर्शन, तप आराधना का क्रम चलता रहे। तपस्या में थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ता आदमी काफी आगे बढ़ सकता है। प्रयास करने से कई कदमों तक आगे बढ़ा जा सकता है। निमित्त और मौका मिलने से कार्य में सफलता मिल सकती है। इस प्रवास में जितना हो सके धार्मिक-आध्यात्मिक उत्थान का प्रयास हो। तपस्या भी उत्थान का एक अंग है। ज्ञानाराधना भी महत्वपूर्ण है, इससे ज्ञान-जानकारियां मिल सकती है।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष महेन्द्र बैद ने अपने उद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ किशोर मंडल, उधना ज्ञानशाला, तेरापंथ कन्या मंडल आदि ने अपनी भाव भरी प्रस्तुति दी। उधना महिला मंडल एवं कन्या मंडल तथा तेयुप सदस्यों ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

श्रमण धर्म से संभव है इहलोकहित, परलोकहित एवं सुगति की प्राप्ति: आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
18 जुलाई, 2024

अध्यात्म के महासागर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शिक्षा का, ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा अनेक विषयों की हो सकती है। अध्यात्म विद्या भी एक ज्ञान होता है, लौकिक विषयों का भी शिक्षण चलता है। विद्यालयों में विद्यार्थी शिक्षा का अध्ययन करते हैं, विद्यावान बनने की दिशा में वे प्रयास करते हैं।

ज्ञान अपने आप में एक पवित्र तत्त्व है। तात्विक दृष्टि से ज्ञान के दो प्रकार हैं- क्षायोपशमिक ज्ञान और क्षायिक ज्ञान। सर्वज्ञता और केवलज्ञान होना क्षायिक ज्ञान होता है। क्षायोपशमिक ज्ञान असंपूर्ण ज्ञान होता है। पांच ज्ञान में प्रथम चार ज्ञान क्षायोपशमिक भाव वाले ज्ञान होते हैं, केवलज्ञान क्षायिक भाव वाला होता है। दोनों ही ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्म के विलय से होते हैं, एक में थोड़ा विलय है, एक में पूरा विलय है।

ज्ञानावरणीय कर्म हमारे ज्ञान के गुण पर आवरण डालने वाला होता है। चूंकि ज्ञान क्षायिक या क्षायोपशमिक भाव है, इसलिए ज्ञान अपने आप में पवित्र होता है। ज्ञान कभी औपशमिक भाव नहीं होता, ज्ञान औदयिक भाव भी नहीं होता, ज्ञान तो क्षायिक या क्षायोपशमिक भाव वाला ही होगा, पारिणामिक भाव तो साथ में होता ही है। विद्या ग्रहण करने में ज्ञानावरणीय कर्म का विलय तो अपेक्षित है ही पर निमित्त रूप में कोई ज्ञान देने वाला गुरु हो और ज्ञान लेने वाला हो तो ज्ञान प्राप्त हो सकता है। ज्ञान लेने वाले में पात्रता और ज्ञान देने वाले में सक्षमता होनी चाहिए, साथ में सहायक सामग्री और आश्रय भी चाहिए।

ज्ञान का कोई ओर-छोर नहीं है, ज्ञान तो अनन्त है। इतने बड़े ज्ञान को कैसे प्राप्त करें? समय थोड़ा है, पूरा जीवन भी लगा दें तो भी ज्ञान पूरा प्राप्त नहीं किया जा सकता। काल सीमित है, उसमें भी विघ्न-बाधायें आ सकती है। समाधान दिया गया कि जैसे हंस दूध और पानी में से केवल दूध को ग्रहण कर लेता है वैसे जो सारभूत हो उन बातों को ग्रहण कर लेना चाहिए।

शास्त्र में कहा गया कि अध्यात्म विद्या और श्रमण धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुश्रुत की उपासना करो। श्रमण धर्म से इहलोक और परलोक में भी हित होता है, सुगति की प्राप्ति होती है। ज्ञान की प्राप्ति में प्रश्न करना भी एक सहायक तत्त्व होता है। स्वाध्याय का एक भेद है- पृच्छना। समाधान देने वाला हो तो प्रश्न करना सार्थक है। प्राचीन ज्ञान हमें आगम आदि ग्रन्थों से प्राप्त हो सकता है। वर्तमान में तो ज्ञान प्राप्ति के अनेक साधन उपलब्ध हैं पर आधुनिक तकनीक का अवांछनीय दुरुपयोग न हो। ज्ञानशाला के माध्यम से भी छोटे-छोटे बच्चों को अध्यात्म का ज्ञान दिया जाता है। उनका जीवन सुसंस्कारों से सुरक्षित रहे। कितने प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाएं ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षण देते हैं।

इहलोकहित, परलोकहित और सुगति की प्राप्ति श्रमण धर्म से हो सकती है, उस श्रमण धर्म को हमें जानना है। इसलिए बहुश्रुत की उपासना कर प्रश्न करें। हम ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ें।

पूज्य प्रवर के अभिनंदन में बाबूलाल भोगर, अनिल बोथरा, निर्मल चपलोत, गौतम आंचलिया, सोनू बाफना, प्रदीप गंग, विमल लोढ़ा, लक्ष्मीलाल गोखरू, फूलचंद चत्रावत, राजेश सुराणा, कनक बरमेचा, गणपत भंसाली, चंपक भाई, प्रवीण भाई, अर्जुन मेडतवाल, शैलेश झवेरी, राजा बाबू एवं दिव्य भास्कर के एडिटर मृगांक कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। दैनिक भास्कर के चीफ एडिटर मुकेश शर्मा एवं अन्य व्यक्तियों ने दिव्य भास्कर की प्रति गुरुदेव को समर्पित की।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के सलाहकार अजय भुतोडिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रवास व्यवस्था समिति, उधना महिला मंडल, कन्या मंडल, पर्वतपाटिया कन्या मंडल, अणुव्रत समिति के सदस्यों ने पृथक-पृथक गीत की प्रस्तुति दी।

अनंत काल की यात्रा में साधु बनना है बड़े भाग्य की बात : आचार्यश्री महाश्रमण

प्रथम भिक्षु के जन्म एवं बोधि दिवस पर एकादशम् भिक्षु ने आठ आत्माओं को प्रदान किया चारित्र रत्न

सूरत।
19 जुलाई 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु के 299वें जन्म एवं 267वें बोधि दिवस के अवसर पर संयम रत्न प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने एक साथ आठ आत्माओं को संयम रत्न प्रदान किया। जिनशासन के महान जैनाचार्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृत देशना में फरमाया कि भगवान महावीर को लोकोत्तम कहा गया है। साधु को भी लोकोत्तम कहा गया है। साधु बनने का अर्थ है लोकोत्तमता की स्थिति को प्राप्त कर लेना। आज आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी है, तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस व बोधि दिवस है। आज के दिन दीक्षा समारोह आयोजित हो रहा है। दो समणीजी श्रेणी आरोहण कर रही हैं, दो मुमुक्षु भाई व चार मुमुक्षु बहनें संयम रत्न को प्राप्त करने के लिए उत्सुक है। पूज्यप्रवर ने दीक्षा हेतु मुमुक्षुओं के पारिवारिकजनों से लिखित एवं मौखिक तथा मुमुक्षुओं से मौखिक स्वीकृति प्राप्त की, दोनों समणी जी से भी मौखिक स्वीकृति ली गई।

अतीत की आलोचना :

आचार्य प्रवर ने भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु एवं उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परम्परा तथा पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का पावन स्मरण करते हुए नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर दीक्षा के लिए उत्सुक समणी जी एवं मुमुक्षु भाई-बहनों को यावज्जीवन के लिए तीन करण-तीन योग से सर्व सावद्य योग का प्रत्याख्यान करवा कर साधु संस्था में सम्मिलित करवाया। पूज्यवर ने नवदीक्षितों को आर्षवाणी से अतीत की आलोचना करवाई।

केश लोच संस्कार : शिष्य की चोटी गुरु के हाथ :

आचार्य प्रवर ने फरमाया कि केश लोच जैन संस्कार हमारी साधना का, चर्या का अंग है। वर्ष में कम से कम एक लोच संवत्सरी से पहले करवाना ही होता है। पूज्य कालूगणी ने तो अस्वस्थ अवस्था में भी लोच करवाया था। पूज्यवर ने दोनों नवदीक्षित मुनियों एवं साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने छहों नवदीक्षित साध्वियों का केश लोच किया। अनंत काल की यात्रा में साधु बनना तो बड़े भाग्य की बात है।

आज का दिन भी आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी का है, अगले वर्ष आचार्य भिक्षु का 300वां जन्म दिवस आने वाला है। राजनगर में आचार्य भिक्षु को बुखार का निमित्त मिला और उन्होंने उस अवस्था में संकल्प कर लिया कि मुझे उत्थान करना है। हम में भी ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि का विकास होता रहे।

रजोहरण प्रदान कर दी अहिंसा की साधना की प्रेरणा :

पूज्यवर ने अहिंसा पालन में सहयोगी रजोहरण व प्रमार्जनी दोनों नवदीक्षित मुनियों को आर्ष वाणी के साथ प्रदान करवाते हुए साधना और विकास का आशीर्वाद प्रदान किया। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने छहों नवदीक्षितों को रजोहरण व प्रमार्जनी प्रदान करवाई।

नामकरण संस्कार:

हमारे जीवन में नाम का भी महत्व है। शुभ नाम होने से दूसरों को भी प्रेरणा मिल सकती है। साधु जीवन में साधुता के अनुरूप नाम हो। आचार्य प्रवर ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों को नूतन नाम प्रदान करवाए :

मुमुक्षु विकास बाफना	-	मुनि वीतराग कुमार
मुमुक्षु सुरेंद्र कोचर	-	मुनि संयम कुमार
समणी अक्षयप्रज्ञाजी	-	साध्वी अक्षयविभा
समणी प्रणवप्रज्ञाजी	-	साध्वी प्रीतिप्रभा
मुमुक्षु मीनाक्षी सामसुखा	-	साध्वी परागप्रभा
मुमुक्षु मीनल परीख	-	साध्वी मेधावीप्रभा
मुमुक्षु दीक्षिता संघवी	-	साध्वी दीक्षितप्रभा
मुमुक्षु नूपुर बरड़िया	-	साध्वी निश्चयप्रभा

नवदीक्षितों को पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि जीवन में साधुता रहे, हर कार्य में संयम रहे। (शेष पेज 14 पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

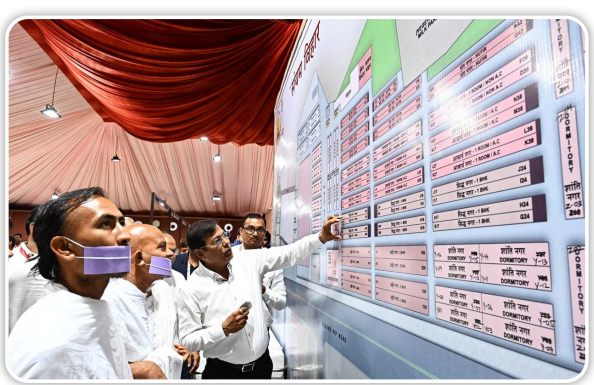

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।